Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِیۡنَ اتَّخَذُوۡا دِیۡنَکُمۡ ہُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡکِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِکُمۡ وَالۡکُفَّارَ اَوۡلِیَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰہَ اِنۡ کُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठा और खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

वर्ष- 7
अंक- 5

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

1 रजब 1443 हिज्री कमरी 3 तब्लीग़ 1401 हिज्री शम्सी 3 फरवरी 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

यह जो रात-दिन मुसलमानों को कलिमा तय्यबा कहने के लिए बार बार कहा गया है। इस का कारण यही है कि बिना उसमें कोई बहादुरी पैदा नहीं हो सकती। जब आदमी لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहता है तो न केवल अल्लाह को देखता है

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

कलिमा तय्यबा बहादुरी पैदा करता है

इस व्यक्ति ने निवेदन की कि इन लोगों को अधिकतर यह पर्दा भी होता है कि शायद किसी को मालूम हो जाए , तो लोग हमारे पीछे पड़ जाएं। फ़रमाया

"इस का कारण यह है कि ऐसे लोग لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ के मानने वाले नहीं होते और सच्चे दिल से इस कलिमा को ज़बान से निकालने वाले नहीं होते।" फ़रमाया:"जब ज़ैद तथा बक्र का ख़ौफ़ दिल में है, तब तक لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ का नक़्श दिल में नहीं जम सकता।" फ़रमाया

"यह जो रात-दिन मुसलमानों को कलिमा तय्यबा कहने के लिए बार बार कहा गया है। इस का कारण यही है कि इस के बिना उसमें कोई बहादुरी पैदा नहीं हो सकती। जब आदमी لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहता है तो समस्त इन्सानों और चीज़ों और हाकिमों और अफ़सरों और दुश्मनों और दोस्तों की शक्ति और ताक़त तुच्छ हो कर इन्सान केवल अल्लाह को देखता है और इसके सिवाए सब उसकी नज़रों में हीन हो जाते हैं। अत: वह साहस और बहादुरी के साथ काम करता है और कोई डराने वाला उसको डरा नहीं सकता।"

दूरदर्शिता

फ़रमाया:"दूरदर्शिता भी एक चीज़ है। जैसा कि इस यहूदी ने देखते ही हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कह दिया कि मैं उनमें नबुव्वत के चिन्ह पाता हूँ और ऐसा ही मुबाहला के समय ईसाई हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाबला पर न आए,क्योंकि उनके परामर्श देने वाले ने उनको कह दिया था कि मैं ऐसे मुँह देखता हूँ कि यदि वह कहीं पहाड़ से कहेंगे कि यहां से टल जा, तो वह टल जाएगा।"

फ़रमाया:"यदि किसी के अन्दरूने में कोई हिस्सा आध्यात्मिकता का है,तो वह मुझको स्वीकार कर लेगा

तालीम(शिक्षा) की पुस्तक लिखने की इच्छा

फ़रमाया:"मैं चाहता हूँ कि एक तालीम की पुस्तस लिखूँ और मौलवी मुहम्मद अली साहिब उसका अनुवाद करें। इस पुस्तक के तीन भाग होंगे।

एक यह कि अल्लाह तआला के लिए हमारे क्या कर्तव्य हैं और दूसरे यह कि अपने नफ़्स के क्या-क्या अधिकार हम पर हैं। और तीसरे यह कि मानव जाति के हम पर क्या-क्या अधिकार हैं।"

औलिया की करामतें

फ़रमाया:"नबुव्वत का ज़माना तो नूर पर नूर था और एक सूर्य था परन्तु इसके बाद के औलिया के जो चमत्कार तथा करामतें बतलाए जाते हैं अपने साथ रहस्योद्घाटन नहीं रखते और उनके इतिहास का सही पता नहीं लग सकता ;अत: शेख़ अब्दुल-क़ादिर जीलानी रहमुल्लाह की करामतें उनके दो सौ साल बाद लिखी गईं और इसके अतिरिक्त उन लोगों को यह दुश्मन के मुक़ाबला का अवसर नहीं मिला और न उनको ऐसा फ़ित्ना सम्मुख आया जैसा कि हमको।"

निर्धारित आयु

फ़रमाया:"अभी हमारे विरोधियों में से बहुत से आदमी ऐसे भी हैं जिनका हमारी जमाअत में दाख़िल होना निर्धारित है। वे विरोध करते हैं पर फ़रिश्ते उनको देखकर हंसते हैं कि तुम अन्त में इन ही लोगों में शामिल हो जाओगे। वे हमारी छुपी हुई जमाअत है जो कि हमारे साथ एक दिन मिल जाएगी।"

(अलबदर 19 मार्च 1905 ई पृष्ठ 5)

सैर से वापस आकर आप अन्दर पधारे और खाने के समय पुन: पधारे और मुल्लाओं की नफ़्स परस्तियों और तलाक़ तथा हलाला की मनहूस रस्मों पर विभिन्न बातें फ़रमाते रहे। ज़ुहर और अस्र की नमाज़ों में जमाअत के साथ सम्मिलित हुए फिर शाम की नमाज़ पढ़ लेने के बाद से नमाज़ इशा पढ़ने के बाद तक लोगों में रहे। एक दोस्त का पत्र और अन्य दो अख़बार नमाज़ के बाद सुने। मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने मीर हामिद शाह साहिब की एक नज़्म सुनाई,जिससे आप बहुत ख़ुश हुए और उसे अख़बार में छपा देने का हुक्म दिया। वह नज़्म यह थी

डंका बजा जहां में मसीह के नाम का
ख़ादिम है दीने पाक रसूले अनाम का

लूका

दूसरे दिन सुब्ह नौ बजे की सैर में डाक्टर लूका के वर्णन पर जिसका ब्यान स्यालकोट के एक अख़बार में से पिछले दिन सुनाया गया था,जिसमें मरहम ईसा के अन्तर्गत लिखा गया था। बहुत देर तक वार्तालाप होती रही। आपने मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब और मौलवी अल्लाह दिया लोधियानी को और अधिक अनुसन्धान का आदेश दिया। वर्तालाप के मध्य में कहा

"अरबी में लक चटनी को भी कहते हैं।" जिस पर मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब ने कहा कि अंग्रेज़ी में लक चाटने को कहते हैं। इस पर आपने फ़रमाया कि "चटनी तक तो बात पहुंच गई है आशा है कि मरहम पट्टी तक भी निकल आए"। फ़रमाया: अंग्रेज़ी किताबों और कलीसा के इतिहास से इसके हालात के बारे में अनुसन्धान करना चाहिए। यह एक नई बात निकली है। फिर कहा:"कि यह कोई मुश्किल कार्य नहीं है। यदि हम चाहें तो लूका पर ध्यान करें और इससे सब हाल पूछ लें,परन्तु हमारी तबीयत इस बात से घृणा करती है कि हम अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी और की तरफ़ ध्यान करें। ख़ुदा तआला आप हमारे सब काम बनाता है।

कश्फ़-ए-क़ुबूर

ये लोग जो कश्फ़-ए-क़ुबूर लिए फिरते हैं। ये सब झूट, व्यर्थ और बेहूदा बात है और शिर्क है। हम ने सुना है। इस ओर एक व्यक्ति फिरता है और इस को बड़ा दावा कशफ़ क़ुबूर का है। यदि उसका ज्ञान सच्चा है, तो चाहिए कि वह हमारे पास आए और हम इस को ऐसी क़ब्रों पर ले जाएंगे जिनसे हम ख़ूब परिचित हैं,परन्तु ये सब बेहूदा बातें हैं और उनके पीछे पड़ना समय को नष्ट करना है। नेक आदमी को चाहिए कि ऐसे विचारों में अपने समय को नष्ट न करे। इस तरीक़ा को धारण करे जो अल्लाह और इसके रसूल और इसके सहाबा ने धारण किया।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 332 से 334 प्रकाशन 2008 ई क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

जब क़ुरैश आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कष्ट देने पर सहमत हो गए और उन्होंने एक दस्तावेज़ लिखा तो हज़रत-ए-सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो उस तंगी के ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रहे

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान के अहमदियों के लिए विशेषत: दुआ की तहरीक दुआ करें अल्लाह ताआला दुनिया को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पहचानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और प्रत्येक षडयंत्र को ख़त्म करे और दुनिया अपने पैदा करने वाले की हक़ीक़त को पहचान ले

माननीय अल्हाज अब्दुर्रहमान एनीन (ennin) साहिब अफ़्सर जलसा सालाना घाना, माननीय अज़्याब अली मुहम्मद अल् जबाली साहिब आफ़ अरदन, माननीय दीन मोहम्मद शाहिद साहिब रिटायर्ड मुरब्बी सिलसिला, माननीय मियां रफ़ीक़ अहमद साहिब कारकुन दफ़्तर जलसा सालाना रब्वाह और माननीया कान्ता ज़फ़र साहिबा पत्नी माननीय एहसानुल्लाह ज़फ़र साहिब साबिक़ अमीर जमाअत अमरीका का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 दिसम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के वर्णन में उनका ग़ुलामों को आज़ाद करने का वर्णन चल रहा था। इस में से कुछ मज़ीद वाक़ियात हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने नहदीया और उनकी बेटी दोनों को आज़ाद कराया। ये दोनों बनू अब्दुल दार की एक महिला की लौंडियां थीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो इन दोनों के पास से गुज़रे उस वक़्त उनकी मालिका ने उनको आटा पीसने के वास्ते भेजा था और वह मालिका यह कह रही थी कि अल्लाह की क़सम मैं तुम्हें कभी आज़ाद नहीं करूँगी या जिसकी भी किस्म वह खा रही थी। बहरहाल हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे उम्मे अमुक! अपनी कसम को तोड़ दो। उसने कहा जाओ जाओ तुमने ही तो उनको ख़राब किया है। तुम्हें अगर इतना ही ख़्याल है तो तुम इन दोनों को आज़ाद करवा लो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि इन दोनों के बदले में कितनी क़ीमत दूं? उसने कहा कि इतनी और इतनी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैंने इन दोनों को ले लिया और ये दोनों आज़ाद हैं। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे कहा कि इस महिला का आटा वापस दे दो अर्थात इन दोनों को जिनको लौंडी बनाया गया था कहा कि इस महिला का आटा वापस दे दो जो पिसाने के लिए लेकर जा रही थीं। उन दोनों ने कहा हे अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो! क्या हम इस काम से फ़ारिग़ हो लें और इस आटा को वापस कर दें? अर्थात जो हमारे ज़िम्मा काम लगाया गया है वह कर लें और आटा पिसवा कर छोड़ आएं? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि ठीक है। अगर तुम दोनों चाहती हो तो ऐसा ही कर लू।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो एक दफ़ा बनू मुआम्मिल की एक लौंडी के पास से गुज़रे। बनू मुआम्मिल बनू अदी बिन काब एक क़बीला था। वह लौंडी मुस्लमान थी। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो बिन ख़िताब उसको ईज़ा दे रहे थे ताकि वह इस्लाम को छोड़ दे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो इन दिनों अभी मुशरिक थे। इस्लाम क़बूल नहीं किया था और उन्हें मारा करते थे यहां तक कि जब वह थक जाते तो कहते कि मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं ने तुम्हें केवल थकावट की वजह से छोड़ा है। इस पर वह कहती कि अल्लाह तुम्हारे साथ भी इसी तरह करेगा। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे भी ख़रीद कर आज़ाद कर दिया था।

एक रिवायत में है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पिता अबू कहाफ़ा ने उनसे कहा कि हे मेरे बेटे मैं देखता हूँ कि तुम कमज़ोर लोगों को आज़ाद करा रहे हो। अगर तुम ऐसा करना चाहते हो जो तुम कर रहे हो तो तुम ताक़तवर मर्दों को आज़ाद करवाओ ताकि वह तुम्हारी हिफ़ाज़त करें और वे तेरे साथ खड़े हों। रावी कहते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि

हे मेरे प्यारे बाप मैं तो केवल अल्लाह की प्रसन्नता चाहता हूँ।

(सीरतुं नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 236 वर्णन उद्वान अलमुशरक़ीन अली अलमस्तज़ाफ़ीन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)इसलिए कुछ मुफ़स्सिरीन अल्लामा करतबी और अल्लामा आलूसी इत्यादि कहते हैं कि निर्मलिखित आयात अल्लाह ताआला ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के इसी अमल की वजह से आप रज़ियल्लाहु अन्हो की शान में नाज़िल फ़रमाई हैं कि

فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ○ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ○ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ○ وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ○ وَ كَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ○ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ○ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ○ اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ○ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ○ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ○ لَا يَصْلٰهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ○ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ○ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ○ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ○ وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ○ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ○ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ○

(सूरः अल् लेयल : 6-22)

अत: वह जिसने (राह-ए-हक़ में) दिया और तक़्वा इख़तियार किया और बेहतरीन नेकी की तसदीक़ की तो हम उसे ज़रूर कुशादगी अता करेंगे। और जहां तक उसका ताल्लुक़ है जिसने कंजूसी की और बेपर्वाई की और बेहतरीन नेकी की तक़ज़ीब की तो हम उसे ज़रूर तंगी में डाल देंगे और उसका माल जब तबाह हो जाएगा तो उसके किसी काम नहीं आएगा। निसंदेह हिदायत देना हम पर बहरहाल फ़र्ज़ है और अंजाम भी लाज़िमन हमारे अधिकार में है और प्रारंभ भी। अत: मैं तुम्हें उस आग से डराता हूँ जो शोला-ज़न है इस में कोई दाख़िल नहीं होगा परन्तु सख़्त बद-बख़्त। वह जिसने झुठलाया और पीठ फेर ली जबकि सबसे बढ़कर मुत्तक़ी इस से ज़रूर बचाया जाएगा जो अपना माल देता है पाकीज़गी चाहते हुए और उस पर किसी का एहसान नहीं है कि जिसका उसकी तरफ़ से बदला दिया जा रहा हो। यह केवल अपने रब की ख़ुशनुदी चाहते हुए ख़र्च करता है और वह ज़रूर राज़ी हो जाएगा (उद्धरित स्यादना हज़रत अबू बकर, व्यक्तिव और कारनामे उर्दू अनुवाद पृष्ठ 74)

(अल्जामे अल्हकाम अल्क़ुरआन ईमाम क़ुर्तबी बहग 2 पृष्ठ 3330 सूर: अल् लेल दार इब्ने हज़्म बेरूत 2004 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो ग़ुलाम आज़ाद किए थे उनमें से एक हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि " एक और सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो जो पहले ग़ुलाम थे उन्होंने एक दफ़ा नहाने के लिए कुरता उतारा तो कोई व्यक्ति पास खड़ा था। उसने देखा कि उनकी पीठ का चमड़ा ऊपर से ऐसा सख़्त और खुर्दरा है जैसे भैंस की खाल होती है। वह यह देखकर हैरान रह गया और उन्हें कहने लगा। तुम्हें यह कब से बीमारी है तुम्हारी तो पीठ का चमड़ा ऐसा सख़्त है जैसे जानवर की खाल होती है। यह सुनकर वह हंस पड़े। "हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हो हंस पड़े" और कहने लगे बीमारी कोई नहीं। जब हम इस्लाम लाए थे तो हमारे मालिक ने फ़ैसला किया कि हमें सज़ा दे। इसलिए तप्ती धूप में लिटा कर हमें मारना शुरू कर देता और कहता कि कहो हम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को नहीं मानते। हम उसके उत्तर में कलमा-ए- शहादत पढ़ देते। इस पर वह फिर मारने लग जाता और जब इस तरह भी उसका ग़ुस्सा न थमता तो हमें पत्थरों पर घसीटा जाता "लिखते हैं कि "अरब में कच्चे मकानों को पानी से बचाने के लिए मकान के पास एक किस्म का पत्थर डाल देते हैं जिसे पंजाबी में खुंगर कहते हैं। यह निहायत सख़्त खुर्दरा और नोकदार पत्थर होता है और लोग उसे दीवारों के साथ इस लिए लगा देते हैं कि पानी के बहाव से उन्हें कोई नुक़्सान ना पहुंचे" अर्थात दीवारों को नुक़्सान ना पहुंचे। "तो वह सहाबी कहने लगे कि जब हम इस्लाम से इंकार न करते और लोग हमें मार मार कर थक जाते तो फिर हमारी टांगों में रस्सी बांध कर उन खुरदुरे पत्थरों पर हमें घसीटा जाता था और जो कुछ तुम देखते

हो उसी मार पीट और घसटने का नतीजा है। उद्देश्य वर्षों तक उन पर ज़ुलम हुआ। आख़िर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से यह बात बर्दाश्त न हो सकी और उन्होंने अपनी जायदाद का बहुत सा हिस्सा बैच करके उन्हें आज़ाद करा दिया।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 22 पृष्ठ 546-547 ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 31 अक्तूबर 1941 ई.)

फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ग़ुलामों को आज़ाद कराने का वर्णन करते हुए एक जगह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "ये ग़ुलाम जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए मुख़्तलिफ़ अक़्वाम के थे उनमें हब्शी भी थे जैसे बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो, रूमी भी थे जैसे सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हो फिर उनमें ईसाई भी थे जैसे जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो और सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हो। और मुशरिकीन भी थे जैसे बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो और अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हो। बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो को उसके मालिक तप्ती रेत पर लिटा कर ऊपर या तो पत्थर रख देते या नौजवानों को सीने पर कूदने के लिए निर्धारित कर देते ... हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब उन पर यह ज़ुलम देखे तो उनके मालिक को उनकी क़ीमत अदा करके उन्हें आज़ाद करवा दिया।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 193-194)

एक दफ़ा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हब्शा की हिजरत का इरादा किया था। इस बारे में आता है कि जब मुस्लमान बढ़ गए और इस्लाम ज़ाहिर हो गया तो कुफ़्फ़ार-ए-क़ुरैश अपने अपने क़बायल में से उन लोगों को सख़्त अज़ीयतें और तकलीफ़ें देने लगे जो उन में से ईमान ला चुके थे। उनका उद्देश्य यह था कि वह उन्हें उनके दीन से फिरा दें। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मोमिनों से फ़रमाया कि तुम लोग ज़मीन में बिखर जाओ। निसंदेह अल्लाह तुम लोगों को इकट्ठा कर देगा। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया हम किस तरफ़ जाएं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस तरफ़ और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने हाथ से हब्शा की सरज़मीन की तरफ़ इशारा फ़रमाया। यह रजब सन् 5 नब्वी की बात है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद पर ग्यारह मर्दों और चार महिलाों ने हब्शा की तरफ़ हिज्रत की।

(शरह अल् ज़र्कानी अलल मवाहिब अल् लुदनी भाग प्रथम पृष्ठ 503-504 अल्हिजरतिल ऊला इला हब्शा,दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

मुस्लमानों के हब्शा की तरफ़ हिज्रत करने के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी कष्ट पहुंचाया गया जिस पर उन्होंने भी हब्शा की तरफ़ हिज्रत का इरादा किया। इसलिए इस बारे में बुख़ारी की रिवायत में है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि जब मुस्लमानों को कष्ट दिया गया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हिज्रत करने के उद्देश्य से हब्शा की तरफ़ चल पड़े। जब वे बर्कुल गिमाद पर पहुंचे। बर्कुल गिमाद यमन का एक शहर है जो मक्का से आगे पाँच रात की मुसाफ़त पर समुंद्र से जुड़ा है। तो उन्हें इब्ने दग़ीना हमला किया और वह करह कबीला का सरदार था। उसने पूछा हे अबू बकर! कहाँ का इरादा है? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा मेरी क़ौम ने मुझे निकाल दिया है और मैं चाहता हूँ कि ज़मीन में चलूं फिरूँ और अपने रब की इबादत करता रहूं। इब्ने दग़ीना ने कहा तुम्हारे जैसा आदमी ख़ुद वतन से नहीं निकलता और न उसे निकाला जाना चाहिए। तुम तो वह ख़ूबियां बजा लाते हो जो नष्ट हो चुकी हैं और तुम सिला रहमी करते हो। थके हारों का बोझ उठाते हो। मेहमान-नवाज़ी करते हो और पीड़ितों को अधिकार दिलाने में मदद करते हो। एक जगह अनुवाद इस तरह भी किया गया है। कंगाल को कमा कर देते रहे हो। रिश्तेदारों से नेक सुलूक किया करते हो। बेचारों को सँभालते हो और मेहमान नवाज़ हो और हक़ की मुश्किलात में मदद करते हो। फिर उसने कहा कि मैं तुम्हें अपनी पनाह में लेता हूँ। वापस चलो और अपने वतन में ही अपने रब की इबादत करो और इब्ने दग़ीना भी चल पड़ा और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ मक्का में आया और कुफ़्फ़ार क़ुरैश के सरदारों से मिला और उनसे कहा अबू बकर ऐसे हैं कि इन जैसा आदमी वतन से नहीं निकलता है और न निकाला जाता है। क्या तुम ऐसे व्यक्ति को निकालते हो जो ऐसी ख़ूबियां बजा लाता है जो नष्ट हो चुकी हैं और वह सिला रहमी करता है। थके हारों के बोझ उठाता है। मेहमान-नवाज़ी करता है और मसायब पर मदद करता है? इस पर क़ुरैश ने इब्ने दग़ीना की पनाह मंज़ूर करली और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को अमन दिया और इब्ने दग़ीना से कहा। अबू बकर से कहो कि वह अपने रब की इबादत अपने घर में ही किया करे। वहीं नमाज़ पढ़े और जो चाहे पढ़े लेकिन हमें अपनी इबादत और क़ुरआन पढ़ने से तकलीफ़ न दे और बुलंद आवाज़ से न पढ़े क्योंकि हमें डर है कि वह हमारे बेटों और हमारी महिलाों को गुमराह कर देगा। इब्ने दग़ीना ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से यह कह दिया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपने घर से ही अपने रब की इबादत करने लगे और अपने घर के सिवा किसी और जगह नमाज़ और क़ुरआन ऐलानिया नहीं पढ़ते। फिर कुछ अर्से के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़्याल आया तो उन्होंने अपने घर के सेहन में एक मस्जिद अर्थात नमाज़ पढ़ने की जगह बना ली और खुली जगह में निकले। वहीं नमाज़ भी पढ़ते और क़ुरआन-ए-मजीद भी और उनके पास मुशरिकों की महिलाओं और बच्चे जमघटा करते। वह ताज्जुब करते। अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखकर ताज्जुब करते और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखते कि वह बहुत ही रोने वाले आदमी थे।

जब क़ुरआन पढ़ते तो अपने आँसूओं को नहीं थाम सकते।

इस कैफ़ीयत ने क़ुरैश के मुशरिक सरदारों को परेशान कर दिया और उन्होंने इब्ने दग़ीना को बुला भेजा। वह उनके पास आया और उन्होंने उससे कहा कि हमने तो अबू बकर को इस शर्त पर पनाह दी थी कि वह अपने घर में अपने रब की इबादत करता रहे लेकिन उन्होंने इस शर्त की पर्वा नहीं की और अपने घर के सेहन में मस्जिद बना ली है और नमाज़ और क़ुरआन ऐलानिया पढ़ना शुरू कर दिया है। हमें डर है कि वह हमारे लड़कों और हमारी महिलाों को आज़माईश में डाल देगा। तुम उसके पास जाओ यदि वह पसंद करे कि अपने घर के अंदर ही रह कर अपनी इबादत करे तो करे अन्यथा अगर ऐलानीया पढ़ने पर डटे रहे तो उसे कहो कि तुम्हारे अमान की ज़िम्मेदारी तुम्हें वापिस कर दे क्योंकि हमें यह बुरा मालूम होता है कि तुम्हारी ज़िम्मेदारी तोड़ें और हम तो अबू बकर को कभी भी ऐलानीया इबादत नहीं करने देंगे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि इब्ने दग़ीना अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आया और कहने लगा आपको इस शर्त का इलम ही है जिस पर मैंने आपकी ख़ातिर यह अह्द किया था। इसलिए या तो आप इस हद तक महिदूद रहें अन्यथा मेरी ज़िम्मेदारी मुझे वापस कर दें क्योंकि मैं पसंद नहीं करता कि अरब यह बात सुनें कि जिस व्यक्ति को मैंने पनाह दी थी उससे मैंने वादा तोड़ा है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैं आपकी पनाह आपको वापस करता हूँ और अल्लाह ही की पनाह पर राज़ी हूँ।

(सही बुख़ारी किताब अल्कफालत, जवारे अबीबकर फी अहदिन्नबिय्य सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम व अक़्देही हदीस नंबर 2297) (सही अल् बुख़ारी अनुवादक भाग 4 पृष्ठ 276 नज़ारत इशात रब्वाह) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 57)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने सेहन में जो मस्जिद बनाई थी उसके बारे में सही बुख़ारी की शरह उम्दतुल क़ारी में लिखा है कि यह मस्जिद घर की दीवारों तक फैली हुई थी और यह पहली मस्जिद थी जो इस्लाम में बनाई गई।

(उम्दतुल क़ारी भाग 12 पृष्ठ 185 किताब अल्कफालत, जवारे अबीबकर फी अहदिन्नबिय्य सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हदीस 2297)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं अबू बकर जैसा इन्सान जिसका सारा मक्का एहसान तले था। वह जो कुछ कमाते थे ग़ुलामों को आज़ाद कराने में ख़र्च कर देते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो एक दफ़ा मक्का को छोड़कर जा रहे थे कि एक रईस आप रज़ियल्लाहु अन्हो से रास्ते में मिला और उसने पूछा अबू बकर तुम कहाँ जा रहे हो? आपने फ़रमाया इस शहर में अब मेरे लिए अमन नहीं है। मैं अब कहीं और जा रहा हूँ। इस रईस ने कहा कि तुम्हारे जैसा नेक आदमी अगर शहर से निकल गया तो शहर बर्बाद हो जाएगा। मैं तुम्हें पनाह देता हूँ। तुम शहर छोड़कर न जाओ। आप इस रईस की पनाह में वापिस आ गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो जब सुबह को उठते और क़ुरआन पढ़ते तो महिलाओं और बच्चे दीवार के साथ कान लगा लगा कर क़ुरआन सुनते क्योंकि आपकी आवाज़ में बड़ा सोज़ और दर्द था और क़ुरआन-ए-करीम चूँकि अरबी में था हर महिला मर्द बच्चा इसके अर्थ समझता था और सुनने वाले इस से प्रभावित होते थे। जब यह बात फैली तो मक्का में शोर पड़ गया कि इस तरह तो सब लोग बेदीन हो जाऐंगे। अर्थात क़ुरआन-ए-करीम सुनके और आपकी दर्द भरी आवाज़ सुनके तो ये लोग बेदीन हो जाऐंगे।

यही हाल आजकल अहमदियों के साथ कुछ मुल्कों में हो रहा है विशेषता पाकिस्तान में कि अगर क़ुरआन पढ़ते और नमाज़ पढ़ते देख लिया अहमदियों को तो बेदीन हो जाऐंगे। इसलिए अहमदी के नमाज़ और क़ुरआन पढ़ने पर बड़ी सख़्त सज़ाएं हैं।

बहरहाल लिखते हैं कि आख़िर लोग इस रईस के पास गए और इससे कहा कि तुमने उसको पनाह में क्यों ले रखा है? इस रईस ने आकर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि आप इस तरह क़ुरआन न पढ़ा करें। मक्का के लोग इस से नाराज़ होते हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया फिर अपनी पनाह तुम वापस ले लू। मैं तो इस से बाज़ नहीं आ सकता। इसलिए उस रईस ने अपनी पनाह वापस ले ली।

(उद्धरित तफ़सीर-ए-कबीर भाग 10 पृष्ठ 327)

शेअब अबी तालिब में भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। क़ुरैश मक्का ने तौहीद के पैग़ाम को रोकने के लिए हर सम्भव कोशिश की परन्तु जब उन्हें हर तरफ़ से नाकामी का मुँह देखना पड़ा तो उन्होंने

एक अमली इक़दाम के तौर पर बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब के साथ सम्बन्ध विच्छेद का फ़ैसला किया। इसलिए इस बारे में सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने इस तरह लिखा है कि "क़ुरैश ... ने एक अमली इक़दाम के तौर पर आपस में मश्वरा करके फ़ैसला किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और समस्त लोगों बनू हाशिम और बनू मतलब के साथ हर किस्म के ताल्लुक़ात ख़त्म कर दिए जाएँ और अगर वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त से दस्तबरदार न हों तो उनको एक जगह कैद करके तबाह कर दिया जाए। इसलिए मुहर्रम 7 नब्वी में एक बाक़ायदा वादा लिखा गया कि कोई व्यक्ति ख़ानदान-ए-बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब से रिश्ता नहीं करेगा और न उनके पास कोई चीज़ फ़रोख़्त करेगा। न उनसे कुछ ख़रीदेगा और न उनके पास कोई खाने पीने की चीज़ जाने देगा और न उनसे किसी किस्म का ताल्लुक़ रखेगा यही सुलूक आजकल कुछ अहमदियों के साथ भी कुछ जगहों पर होता है। बहरहाल इस में आगे लिखा था कि "जब तक कि वह मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से अलग हो कर आपको उनके हवाले न कर दें। यह मुआहिदा जिसमें क़ुरैश के साथ क़बायल बनू किनानह भी शामिल थे बाक़ायदा लिखा गया और समस्त बड़े बड़े सरदारों के इस पर दस्तख़त हुए और फिर वह एक अहम क़ौमी अहदनामा के तौर पर काबा की दीवार के साथ आवेज़ां कर दिया गया। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और समस्त बनू हाशिम और बनू मतलब क्या मुस्लिम और क्या काफ़िर (अतिरिक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा अबू लहब के जिसने अपनी दुश्मनी के जोश में क़ुरैश का साथ दिया) शेब अबी तालिब जो एक पहाड़ी दर्रा की सूरत में था महसूर हो गए और इस तरह गोया क़ुरैश के दो बड़े क़बीले मक्का की तमद्दुनी ज़िंदगी से अमलन बिल्कुल अलग हो गए और शुऐब अबी तालिब मैं जो गोया बनू हाशिम का ख़ानदानी दर्राह था क़ैदियों की तरह नज़रबंद कर दिए गए। कुछ गिनती के दूसरे मुस्लमान जो उस वक़्त मक्का में मौजूद थे वह भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो पृष्ठ 166)

इन मुश्किल तरीन हालात में भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का साथ नहीं छोड़ा। इसलिए हज़रत शाह वलीउल्लाह रहमहुल्लाह ताआला फ़रमाते हैं कि "जब क़ुरैश आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कष्ट देने पर सहमत हो गए और उन्होंने एक दस्तावेज़ लिखा तो हज़रत-ए-सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो उस तंगी के ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शरीक-ए-हाल रहे। इस लिए इस वाक़िया के बारह में अबू तालिब ने यह शेअर कहा है कि

فَسُرَّ أَبُو بَكْرٍ بِهَا وَ مُحَمَّدٌ   هُمُ رَجَعُوا سَهْلَ ابْنَ بَيْضَاءَ رَاضِيًا

और उन्होंने सहल बिन बयजा को ख़ुश करते हुए वापस भेजा तो इस पर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुश हो गए।

(इज़ालतुल अख़फा लेखक हज़रत शाह वली उल्लाह उर्दू अनुवाद इश्तियाक अहमद देवबन्दी भाग 3 पृष्ठ 39-40 क़दीमी कुतुब ख़ाना आराम बाग़ कराची)

(सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो के शब-ओ-रोज़ पृष्ठ 30)

अर्थात जब क़ुरैश मक्का ने आख़िर कार बाईकॉट का यह वादा ख़त्म कर दिया तो इस पर अबूतालिब ने जो पंक्तियाँ कहीं उनमें से एक यह ऊपर लिखित पंक्तियाँ थीं कि बाईकॉट ख़त्म होने पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अबू बकर दोनों खुश हो गए।

غُلِبَتِ الرُّوْمُ की भविष्यवाणी और इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का शर्त लगाना। इस बारे में भी वर्णन आता है। अल्लाह ताआला के इरशाद الٓمّٓ۔ غُلِبَتِ الرُّوْمُ۔ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ के बारे में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है। उन्होंने कहा कि ग़ुलिबत और ग़लबत्। वे कहते हैं कि मुशरिकीन पसंद करते थे कि फ़ारस वाले रुम वालों पर ग़ालिब आ जाएं क्योंकि यह और वे बुत परस्त थे और मुस्लमान पसंद करते थे कि रुम वालों फ़ारस वाले पर ग़ालिब आ जाएं इसलिए कि वे अहल-ए-किताब थे। उन्होंने इसका वर्णन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से किया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस का वर्णन किया तो आपने फ़रमाया वह ज़रूर ग़ालिब आ जाएंगे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस का वर्णन उनसे अर्थात मुख़ालिफ़ीन से, मुशरिकीन से किया तो उन्होंने कहा कि हमारे मध्य और अपने मध्य एक मुद्दत निर्धारित कर लो। अगर हम ग़ालिब आ गए तो हमारे लिए ये और ये होगा और अगर तुम ग़ालिब आ गए तो तुम्हारे लिए ये और ये होगा। अर्थात उस पर शर्त लगाई। तो उन्होंने पाँच साल की मुद्दत रखी और वे ग़ालिब नहीं आ सके। उन्होंने इसका वर्णन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुमने इस से ज़्यादा क्यों नहीं रख लिया। रावी कहते हैं कि मेरा ख़्याल है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुराद दस थी। यह तिरमिज़ी की अबवाब तफ़सीर की रिवायत है।

(सुंन अल् तिरमिज़ी अबवाब अल् तफ़सीर बाब वमिन सूरतुर्रूम ,हदीस 3193)

सही बुख़ारी की एक रिवायत में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चार ऐसी भविष्यवाणियों का वर्णन किया गया है जो कि बड़ी शान के साथ पूरी हुईं। इन भविष्यवाणियों में रुम के विजय वाली भविष्यवाणी भी है। इसलिए मस्रूक़ रिवायत करते हैं कि हम हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास थे। उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब देखा कि लोग रुगिरदानी कर रहे हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अल्लाह जैसा हज़रत यूसुफ़ के वक़्त में सात साला क़हत डाला था उन पर भी ऐसा ही क़हत नाज़िल कर। अत: उन पर ऐसा क़हत पड़ा जिसने हर एक चीज़ को फ़ना कर दिया यहां तक कि आख़िर उन्होंने खाल और मुर्दार और बदबूदार लाशें भी खाईं और उनमें से कोई जो आसमान की तरफ़ नज़र करता तो भूख के मारे उसे धुआँ ही नज़र आता था। जिन चार भविष्यवाणियों का वर्णन है उनमें से एक यह वाक़िया है। अबू सुफ़ियान आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और उन्होंने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) आप तो अल्लाह ताआला की फ़रमांबर्दारी और सिला रहमी का हुक्म करते हैं और यह देखें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ौम हलाक हो गई है। अल्लाह से उनके लिए दुआ करें। अल्लाह ताआला ने फ़रमाया था। अत: इंतिज़ार कर उस दिन का जब आसमान एक स्पष्ट धुआँ लाएगा। ज़रूर तुम इन्ही बातों का दोहराने वाले हो जिस दिन हम बड़ी गिरिफ़त करेंगे। अत: यह बड़ी गिरिफ़त बदर के दिन हुई। इसलिए धुएं का अज़ाब और सख़्त गिरिफ़त और लिज़ाम वाली भविष्यवाणी और रुम की भविष्यवाणी ये सब बातें हो चुकी हैं। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सही अल् बुखारी किताब अल् इस्तस्का बाब दुआइन्नबी (स) अज्अलहा अलैहिम सिनीन हदीस 1007)

इस हदीस की शरह में अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ग़लब-ए-रुम वाली भविष्यवाणी का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि जब फ़ारस वाले और रुम वालों के मध्य जंग हुई तो मुस्लमान फ़ारस वाले पर रुम वालों की फ़तह को पसंद करते थे क्योंकि वे रुम वालों, अहल-ए-किताब थे जबकि कुफ़्फ़ार क़ुरैश फ़ारस वालों की फ़तह को पसंद करते थे क्योंकि वह फ़ारस वाले मजूसी थे और कुफ़्फ़ार क़ुरैश भी बुतों की इबादत करते थे। अत: इस बात पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और अबु जहल के मध्य शर्त लग गई अर्थात उन्होंने किसी चीज़ पर आपस में चंद साल की मुद्दत निर्धारित कर ली तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वहां बिज़उन का शब्द है। बिज़उन तो नौ बरस या सात बरस पर इतलाक़ पाता है। अत: मुद्दत को बढ़ा दो। फिर उन्होंने, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ऐसा ही किया। अत: रुम वालों ग़ालिब आ गए। अल्लाह ताआला ने फ़रमाया। الٓمّٓ۔ غُلِبَتِ الرُّوْمُ۔ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَ هُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ۔ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ۔ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ وَ يَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ۔ بِنَصْرِ اللّٰهِ (रूम 2- 6)

अनुवाद यह है الٓمّٓ कि اَنَا اللّٰهُ اَعْلَمُ۔ अर्थात मैं अल्लाह सबसे ज़्यादा जानने वाला हूँ। रुम वालों मग़लूब किए गए। क़रीब की ज़मीन में और वे अपने मग़लूब होने के बाद फिर ज़रूर ग़ालिब आ जाएंगे। तीन से नौ साल के अरसा तक। हुक्म अल्लाह ही का चलता है पहले भी और बाद में भी और इस दिन मोमिन भी अपनी फ़ुतूहात से बहुत ख़ुश होंगे जो अल्लाह की नुसरत से होगी। और शाबी कहते हैं कि उस वक़्त शर्त लगाना हलाल था।

(उद्धरित अज़ उम्दतुल क़ारी शरह सही बुख़ारी भाग 7 पृष्ठ 46 किताब इस्तस्का हदीस 1007 दारुल अहया अल् तुर्रास अल् अरबी 2003 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बारे में लिखा है कि

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इस्लाम से क़बल और इस्लाम के आरंभिक ज़माना में समस्त सभ्य दुनिया में सबसे ज़्यादा ताक़तवर और सबसे ज़्यादा वसीअ सल्तनतें दो थीं। सलूतनत-ए-फ़ारस और सलूतनत-ए-रुम और ये दोनों सल्तनतें अरब के क़रीब वाक़्य थीं। सलूतनत-ए-फ़ारस अरब के शुमाल पूर्व में थी और सलूतनत-ए-रुम शुमाल पश्चिम में। चूँकि इन सल्तनतों की सरहदें मिलती थीं इसलिए कभी कबार उनका आपस में जंग-ओ-जदल भी हो जाता था। इस ज़माना में भी जिसका वर्णन आता है यह सल्तनतें बुलंदियों पर थीं। यह उस ज़माने की बात है जब भविष्यवाणी हुई और सलूतनत-ए-फ़ारस ने सलूतनत-ए-रुम को ज़ेर किया हुआ था और इसके कई क़ीमती इलाक़े छीन लिए थे और उसे बराबर दबाती चली जाती थी। क़ुरैश बुतपरस्त थे और फ़ारस का भी यही मज़हब था। इसलिए क़ुरैश-ए-मक्का फ़ारस की इन फ़ुतूहात पर बहुत ख़ुश थे। परन्तु मुस्लमानों की सलूतनत-ए-रुम से हमदर्दी थी क्योंकि रूमी सलतनत ईसाई थी और ईसाई अहल-ए-किताब होने की वजह से और हज़रत मसीह नासरी से निसबत रखने के बुत परस्त और मजूसी अक़्वाम की निसबत मुस्लमानों के बहुत क़रीब थे। ऐसे हालात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह ताआला से इलम पाकर भविष्यवाणी फ़रमाई कि इस वक़्त रुम फ़ारस से मग़्लूब हो रहा है परन्तु चंद वर्षों के अर्से में वह फ़ारस पर ग़ालिब आ जाएगा और उस दिन मोमिन ख़ुश होंगे। यह भविष्यवाणी सुनकर मुस्लमानों ने जिनमें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम विशेषता वर्णित हुआ है मक्का में आम ऐलान करना शुरू किया कि हमारे ख़ुदा ने यह बताया है कि अनक़रीब रुम फ़ारस पर ग़ालिब आएगा। क़ुरैश ने उत्तर दिया कि अगर यह भविष्यवाणी सच्ची है तो आओ शर्त लगा लो। चूँकि उस वक़्त तक इस्लाम में शर्त लगाना मना नहीं हुआ था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे मंज़ूर कर लिया और क़ुरैश के सरदारों और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के मध्य चंद ऊंटों की हार जीत पर शर्त क़रार पा गई और छ: साल की समय सीमा निर्धारित हो गई परन्तु जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसकी सूचना पहुंची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। छ: साल की मीयाद निर्धारित करना ग़लती है। अल्लाह ताआला ने तो मीयाद के विषय में بِضۡعِ سِنِیۡنَ शब्दों फ़रमाए हैं जो अरबी मुहावरा के अनुसार तीन से ले के नौ तक के लिए बोले जाते हैं। यह उस ज़माने की बात है जब कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में ही मुक़ीम थे और हिज्रत नहीं हुई थी। इसके बाद मुक़र्ररा मीयाद के अंदर अंदर ही जंग ने अचानक पल्टा खाया और रुम ने फ़ारस को ज़ेर करके थोड़े अरसा में ही अपना समस्त इलाक़ा वापस छीन लिया। यह हिज्रत के बाद की बात है। (उद्धरित अज़ सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम-ए पृष्ठ 216-217) जिसके बाद फिर रोमियों की फ़तह हो गई थी।

इस बारह में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि "आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अभी मक्का में ही थे कि अरब में यह ख़बर प्रसिद्ध हुई कि ईरानियों ने रोमियों को शिकस्त दे दी है इस पर मक्का वाले बहुत ख़ुश हुए कि हम भी मुशरिक हैं और ईरानी भी मुशरिक। ईरानियों का रोमियों को शिकस्त दे देना एक नेक शुगून है और इसके अर्थ ये हैं कि मक्का वाले भी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ग़ालिब आजाऐंगे।'' ये शुगून उन्होंने निकाला "परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा ने बताया कि لِبَتِ الرُّوۡمُ۔ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ هُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِهِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ۔فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ۔ रूमी हुकूमत को शाम के इलाक़ा में बे-शक शिकस्त हुई है लेकिन इस शिकस्त को तुम क़तई न समझो। मग़लूब होने के बाद रूमी फिर 9 साल के अंदर ग़ालिब आजाऐंगे। इस भविष्यवाणी के प्रकाशित होने पर मक्का वालों ने बड़े बड़े क़हक़हे लगाए यहां तक कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से कुछ कुफ़्फ़ार ने सौ-सौ ऊंट की शर्त बाँधी कि अगर इतनी शिकस्त खाने के बाद भी रुम तरक़्क़ी कर जाए तो हम तुम्हें सौ ऊंट देंगे और अगर ऐसा न हुआ तो तुम हमें सौ ऊंट देना। बज़ाहिर उस भविष्यवाणी के पूरा होने का इमकान दूर से दूर-तर होता चला जा रहा था। शाम की शिकस्त के बाद रूमी नियमित कई शिकस्तें खाकर पीछे हटता गया यहां तक कि ईरानी फ़ौजें बहीरा मार मोरा (marmara sea) ... के किनारों तक पहुंच गईं। क़ुस्तुनतुनिया अपनी एशियाई हुकूमतों से बिल्कुल अलग हो गया और रुम की ज़बरदस्त हुकूमत एक रियासत बन कर रह गई परन्तु ख़ुदा का कलाम पूरा होना था और पूरा हुआ। इंतिहाई मायूसी की हालत में रुम के बादशाह ने अपने सिपाहियों समेत आख़िरी हमला के लिए क़ुस्तुनतुनिया से ख़ुरूज किया और एशियाई साहिल पर उतर कर ईरानियों से एक फ़ैसलाकुन जंग की तरह डाली। रूमी सिपाही बावजूद संख्यां और सामान में कम होने के क़ुरआन-ए-करीम की भविष्यवाणी के अनुसार ईरानियों पर ग़ालिब आए। ईरानी लश्कर ऐसा भागा कि ईरान की सरहदों से परे उसका क़दम कहीं भी नहीं ठहरा और फिर दुबारा रूमी हुकूमत के अफ़्रीक़ी और एशियाई मफ़्तूहा देश उसके क़ब्ज़ा में आगए।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन। अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 445)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "जब अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अबुजहल से शर्त लगाई और क़ुरआन शरीफ़ की वह भविष्यवाणी शर्त क्र रूप में रखी कि الٓمّٓ ۔ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ۔ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ هُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِهِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ۔فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ ۔ (अल् रूम : 2 से 6) और यह तीन बरस का अरसा ठहराया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भविष्यवाणी की सूरत को देखकर तुरंत दूर अंदेशी को काम में लाए और शर्त की किसी क़दर तरमीम करने के लिए अबू बकर सिद्दीक़ को हुक्म फ़रमाया और फ़रमाया कि بِضۡعِ سِنِیۡنَ का शब्द मुजमल है और अक्सर नौ बरस तक इतलाक़ पाता है।"

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 310-311)

फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क़बायल के सामने अपने आपको पेश करना अर्थात अपना दावा पेश करना और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का आपके साथ साथ होना।

जब अल्लाह ताआला ने अपने दीन को ग़ालिब करने और अपने नबी को इज़्ज़त-ओ-इकराम अता फ़रमाने और अपने वादे को पूरा करने का इरादा किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज के अय्याम में बाहर निकले और अंसार के क़बायल ओस और ख़ज़रज से मुलाक़ात की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज के अय्याम में अपने आपको पेश किया जैसा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर साल हज के दिनों में किया करते थे। इसलिए एक रिवायत में वर्णित है। हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि जब अल्लाह ताआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया कि वह अपने आपको क़बायल अरब के सामने पेश करें तो मैं और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह मिना की तरफ़ निकले यहां तक कि हम अरबों की एक मज्लिस के पास पहुंचे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आगे बढ़े और आप रज़ियल्लाहु अन्हो हसब-ओ-नसब में महारत रखते थे। उन्होंने पूछा आप लोग किस क़ौम से हो? उन्होंने कहा कि रबीया क़बीला से। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा रबीया की किस शाख़ से? उन्होंने कहा ज़ुहल से। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हम लोग ओस और ख़ज़रज की मज्लिस में गए और यही वे लोग हैं जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अंसार का नाम दिया था क्योंकि उन्होंने आपको पनाह और मदद देना क़बूल किया था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हम नहीं उठे यहां तक कि उन लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत कर ली।

(शरह अल् ज़र्कानी भाग 2 पृष्ठ 72 से 74 ज़िक्र अर्ज़िल मुस्तफा नफ़्सहू अलल्क़बाइल दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

एक और रिवायत में है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन फ़रमाया कि जब अल्लाह ताआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया कि वह अपने आपको अरब क़बायल के सामने पेश करें तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस ग़रज़ से निकले। मैं और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। हम एक मज्लिस में पहुंचे जिसमें शांति और वक़ार था। वे लोग ऊँचे स्थान वाले और सम्मानीय थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे पूछा तुम लोग किस क़बीले से ताल्लुक़ रखते हो? उन्होंने कहा हम बनू शेबान बिन सालाबा से हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ मुतवज्जा हो कर कहा। मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान उनकी क़ौम में इस से बढ़कर कोई और सम्मानित नहीं। इन लोगों में मफ़रूक़ बिन अम्र, मुसन्ना बिन हारिसा, हानी बिन कबीसा और नुमान बिन शरीक थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके सामने यह आयत पढ़ी

لۡ تَعَالَوۡا اَتۡلُ مَا حَرَّمَ رَبُّکُمۡ عَلَیۡکُمۡ اَلَّا تُشۡرِکُوۡا بِهٖ شَیۡـًٔا وَّبِالۡوَالِدَیۡنِ اِحۡسَانًا ۚ
وَلَا تَقۡتُلُوۡۤا اَوۡلَادَکُمۡ مِّنۡ اِمۡلَاقٍ ؕ نَحۡنُ نَرۡزُقُکُمۡ وَاِیَّاهُمۡ ۚ وَلَا تَقۡرَبُوا الۡفَوَاحِشَ
مَا ظَهَرَ مِنۡهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقۡتُلُوا النَّفۡسَ الَّتِیۡ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالۡحَقِّ ؕ ذٰلِکُمۡ

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ(अल् ईनाम : 152)

इसका अनुवाद यह है कि तू कह दे। आओ मैं पढ़ कर सुनाऊँ जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम कर दिया अर्थात यह कि किसी चीज़ को इस का शरीक न ठहराओं और लाज़िम कर दिया है कि माता पिता के साथ एहसान से पेश आओ और रिज़्क़ की तंगी के ख़ौफ़ से अपनी औलाद को क़तल न करो। हम ही तुम्हें रिज़्क़ देते हैं और उनको भी और तुम बे निर्लज्जता के जो उनमें ज़ाहिर हों और जो अंदर छिपी हुई हूँ दोनों के क़रीब न फटको और किसी ऐसी जान को जिसे अल्लाह ने हुर्मत बख़शी हो क़तल न करो परन्तु हक़ के साथ। यही है जिसकी वह तुम्हें ताकीद करता है ताकि तुम अक़्ल से काम लो।

इस पर मफ़रूक़ ने कहा कि यह कलाम ज़मीन वालों का नहीं। अगर यह उनका कलाम होता तो हम ज़रूर जान लेते। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह आयत तिलावत फ़रमाई

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ وَ اِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَ يَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ وَ الْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ (अल् नहल : 91)

अर्थात निसंदेह अल्लाह अदल का और एहसान का और ग़रीबों पर की जाने वाली अता की तरह अता का हुक्म देता है और बे हयाई और नापसंदीदा बातों और बग़ावत से मना करता है। वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम इबरत हासिल करो।

यह कलाम सुनने के बाद मफ़रूक़ ने कहा। हे क़ुरैशी भाई अल्लाह की क़सम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उच्च आचरण और अच्छे कामों की तरफ़ बुलाया है। निसंदेह ऐसी क़ौम सख़्त झूठी है जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को झुठलाया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ एक दूसरे की मदद की। मुसंनी ने कहा हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात सुनी हे मेरे क़ुरैशी भाई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बेहतरीन गुफ़्तगु की और जो बातें आपने कहीं उन्होंने मुझे आश्चर्यचकित किया लेकिन हमारा किसरा के साथ एक समझोता है कि न हम कोई नया काम करेंगे और न कोई नया काम करने वाले को पनाह देंगे और ग़ालिबन जिस चीज़ की तरफ़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमें बुला रहे हैं यह उनमें से है जिसे बादशाह भी नापसंद करते हैं। अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चाहते हैं कि अरब के क़ुरब-ओ-जवार के लोगों के मुक़ाबला में हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदद करें और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त करें तो हम ऐसा करेंगे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया तुम्हारे उत्तर में कोई बुराई नहीं क्योंकि तुम लोगों ने वज़ाहत के साथ सच्चाई का इज़्हार कर दिया।

अल्लाह के दीन पर वही क़ायम रह सकता है जिसको अल्लाह ने हर तरफ़ से घेरे में लिया हो।

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का हाथ पकड़ा और उठकर रवाना हो गए।

(मारेफ़तुल सहाब ले अबी नईम भाग 4 पृष्ठ 309-310 रिवायत नंबर 6382 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

एक रिवायत है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया कि तुम्हारा क्या ख़्याल है अगर थोड़ी सी मुद्दत में अल्लाह ताआला तुम्हें इन अर्थात किसरा की सरज़मीन और मुल्क का वारिस बना दे और उनकी महिलाएं तुम्हारे क़बज़ा में आ जाएं तो क्या तुम अल्लाह की तस्बीह-ओ-तक़दीस करोगे? यह सुनकर उसने कहा कि इलाही हम तैयार हैं अर्थात क़सम खाई। ख़ुदा की क़ुदरत देखें कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह बात शब्द शब्द पूरी हुई और वही मुसन्ना जो उस वक़्त किसरा की ताक़त से इतना भयभीत था कि उसकी नाराज़गी के डर से इस्लाम क़बूल करने से हिचकिचा रहा था कुछ ही देर बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में इसी किसरा से मुक़ाबला करने वाली इस्लामी फ़ौज के सिपहसालार यही मुसन्ना बिन हारिसा ही थे जिन्हों ने किसरा की कमर तोड़ के रख दी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बशारतों के मिस्दाक़ बने।

(उद्धरित स्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो का व्यक्तित्व और कारनामे, उर्दू अनुवाद पृष्ठ 82,84)

इसी तरह एक हज के अवसर की रिवायत यूं है कि जब क़बीला बकर बिन वायल हज के लिए मक्का आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि इन लोगों के पास जाएं और मुझे उनके सामने पेश करें अर्थात तब्लीग़ करें, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दावा पेश करें। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उन लोगों के पास गए और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनकी ख़िदमत में पेश किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको इस्लाम की तब्लीग़ की।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 7 बाब अर्ज़िल मुस्तफा नफ्सहू अलल्क़बाइलदारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

बाक़ी इंशा-ए-अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा।

आज में अफ़ग़ानिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ के लिए भी कहना चाहता हूँ।

बहुत तकलीफ़ से गुज़र रहे हैं। कुछ गिरफ्तारियां भी हुई हैं। महिलाओं, बच्चे बड़े अपने घरों में परेशान हैं। जो मर्द बाहर हैं, गिरफ़्तार नहीं हुए वे भी बे-घर हुए हुए हैं क्योंकि ख़तरा है कि गिरफ्तारियां न हो जाएं। अल्लाह ताआला उनके लिए आसानियां पैदा फ़रमाए और उनको इस मुश्किल से निकाले।

फिर पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ करें

वहां भी उमूमी तौर पर हालात ख़राब ही होते हैं। कहीं न कहीं कोई न कोई वाक़िया हो जाता है। वे लोग अहमदियों को तकलीफ़ें दे रहे हैं।

इसी तरह मजमूई तौर पर भी दुआ करें अल्लाह ताआला दुनिया को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पहचानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हर उपद्रव को ख़त्म करे और दुनिया अपने पैदा करने वाले की हक़ीक़त को पहचान ले।

इसके बाद में कुछ मरहूमीन का वर्णन करूँगा। जिनका बाद में जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा।

पहला वर्णन है अल्हाज अब्दुर्रहमान एंनीन (ennin) साहिब का। यह घानीन थे। घाना के साबिक़ सैक्रेटरी उमूर-ए-आमा और अफ़्सर जलसा सालाना थे। इक्यासी (81) वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। दोनों माता पिता उनके अहमदी थे। उनके माता पिता ने अहमदियत क़बूल की थी। आला तालीम उन्होंने मिस्र से हासिल की और फिर वहां से आला तालीम हासिल करने के बाद अपनी अमली ज़िंदगी का आरंभ किया और यहां घाना में आकर मुख़्तलिफ़ बड़ी कंपनियों में मैनेजर की हैसियत से काम किया। फिर आपने नाईजीरिया में भी कुछ अरसा काम किया। फिर उन्होंने ख़ुद अपनी कंपनी खोल ली जिसके यह मैनेजिंग डायरेक्टर थे। बड़े नेक, मुख़लिस इन्सान थे। जमाअत की अनुकरणीय ख़िदमत की तौफ़ीक़ उन्हें मिलती रही। सारी ज़िंदगी जमाअती लाभ और काम को अपने ज़ाती मुफ़ाद पर प्राथमिकता दी। मुख़्तलिफ़ ओहदों पर फ़ायज़ रह कर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाते रहे। हमेशा अमीर जमाअत की इताअत और हर आवाज़ पर लब्बैक कहने में अपनी सआदत समझते थे। अक्सर औक़ात सुबह पहले वक़्त में मिशन आकर अमीर साहिब से मिलते और मालूम करते। अगर कोई जमाअती काम हो तो पहले निपटाते और फिर अपने काम के लिए जाते। यह ग्रेटर इक्रा रीजन (greater accra region) के बड़ा लंबा अरसा सदर रहे हैं। फिर नवासी 89 ई. से लेकर अठानवे 98 ई. तक मज्लिस अन्सारुल्लाह के सदर रहे। फिर सैक्रेटरी उमूर-ए-आमा उन्होंने बड़ा लंबा अरसा काम किया। फिर अफ़्सर जलसा सालाना के तौर पर उनको काम की तौफ़ीक़ मिली और वफ़ात के वक़्त नैशनल ट्रस्टी की हैसियत से ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे।

हर किसी की मदद के लिए हरवक़्त तैयार रहते थे। बहुत हमदर्द थे। हमदर्दी केवल अपनी फ़ैमिली तक सीमित नहीं थी बल्कि आपकी सख़ावत रिश्तेदारों, दोस्तों के अतिरिक्त जमाअत के लोगों और बिना धर्म आदि देखे मुहल्ले के लोगों तक फैली हुई थी। जमाअत के वफ़ादार और ख़िलाफ़त के जांनिसार सिपाही थे। हमेशा जमाअती मुफ़ाद को हर दूसरी चीज़ पर फ़ौक़ियत दी और कभी किसी मुख़ालिफ़त की कोई पर्वा नहीं की। तहज्जुद गुज़ार थे। बड़ी बाक़ायदगी से तहज्जुद पढ़ने वाले थे और यात्रा और घर में हर जगह इसकी पाबंदी करते थे। मूसी थे और उनमें चंदों में बड़ी बाक़ायदगी थी। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त पाँच बेटे और पाँच बेटियां छोड़ी हैं।

घाना के मुरब्बी हाफ़िज़ मुबश्शिर अहमद लिखते हैं कि उनमें बहुत दूर अंदेशी थी। बड़े संक्षेप में और मंतक़ी बात करते थे और तुरंत मामले की ते तक पहुंच जाते थे। बोर्ड की मीटिंग के दौरान एक दफ़ा कहते हैं हर कोई अपनी राय दे रहा था। एक मामला था जिसको तूल दिया जा रहा था। आप ख़ामोशी से सुनते रहे। जब उनकी बारी आई तो उन्होंने कहा कि इस बारे में ख़लीफ़ा वक़्त की तरफ़ से एक फ़ैसला आ गया है इसलिए हमें बेहस

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

करने की ज़रूरत नहीं क्योंकि जब ख़लीफ़ा वक़्त की तरफ़ से फ़ैसला आ जाए तो फिर कोई राय नहीं देनी चाहिए बल्कि हमें इस पर उसी प्रकार अमल करना चाहिए। इस किस्म के प्रेमी अल्लाह ताआला ने दूर दराज़ इलाक़ों में भी अता फ़रमाए हुए हैं।

फिर अगला वर्णन है आदरणीय अज़्याब अली मुहम्मद अल् जिबाली साहिब का जो पिछले दिनों फ़ौत हुए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह अरदन की जमाअत के थे। सदर साहिब अरदन जमाअत लिखते हैं कि उन्होंने 2010 ई. में बैअत की थी। अपने इलाक़े में अकेले अहमदी थे और यहां के रस्म-ओ-रिवाज के अनुसार क्योंकि पति के साथ उसकी पत्नी भी इसी दीन पर आ जाती हैं इसलिए वह भी अहमदी हो गईं। कहते हैं कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और अहमदियत और ख़िलाफ़त पर मरहूम का ईमान पहाड़ों की तरह मज़बूत था। क़बूल-ए-अहमदियत की वजह से ख़ानदान और अन्य मुख़ालिफ़ीन की मुख़ालिफ़त के बावजूद मरहूम इस्तिक़ामत का एक उदाहरण थे। अहमदियत और ख़िलाफ़त के लिए बड़ी ग़ैरत रखते थे और बड़ी क़ुव्वत से दिफ़ा करते थे। मरहूम को इलम सीखने और तब्लीग़ का बहुत शौक़ था। बसा-औक़ात रात गए फ़ोन करके मसायल के बारे में पूछते थे। इस तरह उनके घर पर मुख़ालिफ़ीन और रिश्तेदारों के साथ कई तब्लीग़ी नशिस्तें आयोजित हुईं। मरहूम शूगर के मरीज़ थे और बड़ी ज़्यादा तकलीफ़ में थे और इस वजह से असल में तो यह बीमारी ही जान-लेवा थी। उनके कुछ रिश्तेदार उन्हें इस बीमारी में कहते थे कि तुम्हारा यह हाल अहमदियत की वजह से हुआ है। तुम अहमदियत छोड़ दो तो हम क़ियामत के दिन तुम्हारे हक़ में गवाही देंगे। इस पर यह बड़े जोश से दुआ करते हुए कहते कि हे ख़ुदा मुझे अहमदी मुस्लमान होने की हालत में ही वफ़ात देना।

अगला वर्णन है माननीय दीन मोहम्मद शाहिद साहिब का जो रिटायर्ड मुरब्बी थे आजकल कैनेडा में थे। बानवे (92) वर्ष की आयु में उनकी पिछले दिनों वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके पिता साहिब के माध्यम से आई जिन्हों ने 1938 ई. में बैअत की तौफ़ीक़ पाई 1940 ई. में उनके पिता उनको अपने हमराह जलसा क़ादियान में ले के गए जहां आपके पिता साहिब ने क़ादियान के तालीमी माहौल और दीनी माहौल से प्रभावित हो कर और उनका भी पढ़ने लिखने का जो शौक़ था उसको देखते हुए क़ादियान में ही उनको ग्यारह साल की उम्र में हज़रत मीर मुहम्मद इसहाक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़ेरे निगरानी छोड़ा और फिर वहीं उन्होंने तालीम हासिल की। 1953 ई. में उन्होंने जामिआ अहमदिया से शाहिद की डिग्री हासिल की। पाकिस्तान के मुख़्तलिफ़ शहरों में मुरब्बी के तौर पर काम किया। तीन चार वर्ष जज़ायर फिजी में बतौर मिशनरी इंचार्ज ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। रब्वाह में लंबा अरसा बतौर प्रैस सैक्रेटरी भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। उन्होंने चार कुतुब तसनीफ़ करने के अतिरिक्त मुतअद्दिद इलमी मज़ामीन लिखने की तौफ़ीक़ पाई। तब्लीग़ का उन्हें बड़ा जुनून था। नए नए तरीक़े इख़्तियार करते रहते थे। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त दो बेटे और तीन बेटियां शामिल हैं।

अगला वर्णन है माननीय मियां रफ़ीक़ अहमद साहिब का जो कारकुन दफ़्तर जलसा सालाना थे सतासी (87) साल की आयु में पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके पिता का नाम मियां बशीर अहमद साहिब मरहूम था। क़ायम-ए-पाकिस्तान से पहले ही वह क़ादियान से हिज्रत करके कोयटा आ गए थे जहां उनके पिता को बतौर अमीर जमाअत कोयटा ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। मियां रफ़ीक़ साहिब के ख़ानदान में अहमदियत का उदय उनके दादा हज़रत डाक्टर अब्दुल्लाह साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से से हुआ। 1960 ई. में मियां रफ़ीक़ साहिब ने इंजनीयरिंग कॉलेज लाहौर से मकैनीकल इंजनीयरिंग में बी. एस. सी किया। इसके बाद फिर यह मुख़्तलिफ़ महिकमों में काम करते रहे। फिर तनज़ानिया चले गए। तक़रीबन दस साल का अरसा तनज़ानिया में गुज़ारा। फिर कुछ अरसा वहां किसी कंपनी में काम के अतिरिक्त पढ़ाते भी रहे। तनज़ानिया में भी उन्हें सैक्रेटरी माल के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। 1986 ई. में उन्होंने वक़्फ़-ए-आरिज़ी के तौर पर जलसा सालाना के दफ़्तर में ख़िदमात बजा लाना शुरू कीं और फिर 1987 ई. में बाक़ायदा दफ़्तर जलसा सालाना में कारकुन की हैसियत से काम शुरू किया। फिर 1989 ई. में eighty nine में ज़िंदगी वक़्फ़ करके दफ़्तर जलसा सालाना रब्वाह के टेक्नीकल विभाग में बतौर नाज़िम टेक्नीकल उमूर ख़िदमात बजा लाना शुरू कीं महिलाा दम-ए-आख़िर इसी ख़िदमत पर मामूर रहे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने उनका रिश्ता करवाया था और मौलाना अबुल अता साहिब ने उनका निकाह पढ़ाया था। उनको अल्लाह ताआला ने तीन बेटों और एक बेटी से नवाज़ा।

उनके बेटे कहते हैं अगर सिलसिला के बारे में कभी किसी जगह कोई ग़लत बात की जाती तो तुरंत रोक देते और मना करते। ख़िलाफ़त से आपको बेहद प्यार था। एक दफ़ा घर के किसी व्यक्ति ने या घर में मेहमानों ने वर्णन किया कि आपको जमाअत की तरफ़ से जो क्वार्टर मिला है बहुत छोटा है। अगर आप कहें तो आपको बड़ा मिल सकता है। उन्होंने कहा मुझे अगर जमाअत टेंट में भी रखेगी तो मैं रहने को तैयार हूँ। मैं कोई मुतालिबा नहीं करूँगा। फिर उनके बेटे ने लिखा कि पिता साहिब की वफ़ात के बाद उनकी यह ख़ूबी हमारे इलम में आई कि कुछ ग़रीबों की पोशीदा तौर पर मदद किया करते थे। उनके छोटे बेटे कहते हैं कि तहज्जुद गुज़ार थे। क़ुरआन-ए-करीम से मुहब्बत रखने वाले थे। नर्म-दिल, प्यार भरा लहजा, ईमानदार, सच्चाई और बेशुमार आला विशेषताओं के हामिल थे। पिता साहिब में ख़लीफ़-ए-वक़्त की इताअत और ख़िलाफ़त से वफ़ा और वक़्फ़ निभाने का ग़ैरमामूली भावना पाई जाती थी।

यह मैं ने भी उनमें देखा है कि इंतिहाई शरीफ़ उल-नफ़्स इन्सान, बड़ी आजिज़ी से हर काम करने वाले और वफ़ा के साथ अपना बैअत का हक़ अदा करने वाले थे।

इसी तरह उनकी यह कोशिश होती थी कि जमाअत का पैसा किस तरह बचाया जाए और किस तरह कम से कम ख़र्च में ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाया जाए। उन्होंने कुछ रोटी पकाने की मशीनें भी डिज़ाइन कीं और उनके लिए रब्वाह में काफ़ी काम किया है। फिर यह लिखते हैं कि तकलीफ़ या परेशानी के वक़्त मैंने हमेशा उनमें सब्र और हौसला देखा है। अक्सर दफ़ा परेशानी या तकलीफ़ के वक़्त क़ुरआन-ए-करीम पढ़ते देखा। बीमारी के वक़्त और वफ़ात से पूर्व भी उन्होंने ज़रा भी तकलीफ़ का एहसास नहीं होने दिया। हर काम बड़ी ईमानदारी और जज़्बे से करते थे। पहले भी वर्णन हो चुका है।

अगला वर्णन माननीया कान्ता ज़फ़र साहिबा का है जो माननीय एहसानुल्लाह ज़फ़र साहिब साबिक़ अमीर जमाअत अमरीका की पत्नी थीं। पिछले दिनों कार के हादिसे में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन 1941 ई. की उनकी पैदाइश थी। चौधरी आज़म अली साहिब रिटायर्ड सैशन जज उनके पिता थे। उनके नाना चौधरी फ़क़ीर मुहम्मद साहिब थे जिनको पार्टीशन के फ़ौरन बाद बतौर नाज़िर उमूर-ए-आम्मा ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। बहुत ख़ूबियों के मालिक और ख़ुश-मिज़ाज महिला थीं। ख़िलाफ़त से हमेशा वफ़ा का ताल्लुक़ रखा और इस का उन्होंने बहुत इज़्हार भी किया। मरहूमा को क़ुरआन-ए-मजीद से बहुत इशक़ था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बहुत लगाव था। अपने बच्चों में भी यही इशक़ और अक़ीदत पैदा करने की कोशिश की। अल्लाह ताआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में मियां के अतिरिक्त दो बेटियां भी शामिल हैं। उनका एक जवान बेटा भी था जो ऐक्सिडन्ट में कई साल हो गए फ़ौत हो गया और बड़े सब्र से उन्होंने यह सदमा बर्दाश्त किया।

इनामुल हक़ कौसर साहिब आस्ट्रेलिया के मुरब्बी लिखते हैं कि जब यह अमरीका में थे तो कहते हैं क़ुरआन-ए-करीम की क्लासें लगती थीं। उनमें बाक़ायदगी से शामिल होती थीं और बड़ी दूर का फ़ासिला तै करके आया करती थीं। यह पी. एच.डी डाक्टर थीं परन्तु तबीयत इंतिहाई सादा थी। किसी किस्म का कोई फ़ख़र या दिखावे का पहलू नहीं था। ग़रीबों और हाजतमंदों का बहुत ख़्याल रखा करती थीं। मुबल्लग़ीन से एक मेहरबान माँ जैसा व्यवहार था और बहुत इज़्ज़त और एहतिराम से पेश आतीं और बड़ी आजिज़ी से सारे काम करतीं। लजना को अक्सर कहा करती थीं कि जूते रखने की जो जगह है वहां जूते रखो और अगर कोई नहीं रखता था तो ख़ुद उठा उठा कर यह काम भी कर लिया करती थीं। इसके अतिरिक्त भी मस्जिद की सफ़ाई इत्यादि का काम बड़ी आजिज़ी से किया करती थीं। कहते हैं कि तकब्बुर या दिखावा बिल्कुल नहीं था। बहुत सादा लिबास पहनतीं। बहुत उम्दा तरीक़ से पेश आतीं। किसी से कोई नाराज़गी नहीं थी। हर एक से बहुत उम्दा तरीक़ से पेश आती थीं। ख़िलाफ़त की तरफ़ से होने वाली हर तहरीक पर लब्बैक कहती थीं।

अल्लाह ताआला इन समस्त मरहूमीन से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनकी नसलों को भी उनके नक़श-ए-क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 07 जनवरी 2022 पृष्ठ 5-10)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

ख़ुत्बः जुमअः

ख़ुदा की कसम हे मक्का! तो अल्लाह की ज़मीन में से मुझे सबसे ज़्यादा महबूब है और तू अल्लाह की ज़मीन में से अल्लाह को भी सबसे ज़्यादा महबूब है और अगर तेरे रहने वाले मुझे ज़बरदस्ती न निकालते तो मैं कभी भी न निकलता (अल् हदीस)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताएँ और गुण

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मुझे हिज्रत की इजाज़त मिल गई है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बेसाख़ता अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिफ़ाक़त? अर्थात मैं भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमके साथ हूँगा? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : हाँ

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 दिसम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन चल रहा था। बैअत-ए-उक़बा सानिया के वर्णन में लिखा है कि बैअत-ए-उक़बा सानिया के अवसर पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो थे। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो जो कि इस तक़रीब और मीटिंग के गोया मुंतज़िम-ए-आला थे उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को एक घाटी पर बतौर पहरेदार खड़ा किया और एक दूसरी घाटी पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को, उन्होंने पहरे और हिफ़ाज़त के लिए खड़ा किया था।

(सीरतुल हल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 21 बाब अर्ज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम نفسه على القبائل... दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

फिर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदीना से हिजरत जब हुई है इस में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के साथ होने का वर्णन है।

लिखा है कि कुफ़्फ़ार-ए-मक्का का मक्का में मुक़ीम मुस्लमानों पर ज़ुलम-ओ-सितम नियमित रूप से बढ़ता जा रहा था कि इसी दौरान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक स्वपन दिखाया गया जिसमें दो मुस्लमानों को वह जगह दिखाई गई जिधर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने हिज्रत करना थी। वह जगह शोर ज़मीन वाली ख़ज़ूरों में घिरी हुई थी लेकिन इस का नाम न दिखाया गया था और न बताया गया था। जबकि उसका जुग़राफ़िया और नक़्शा देखते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद इजतिहाद फ़रमाते हुए फ़रमाया कि हिज्र या यमामा होगी जैसा कि सही बुख़ारी की एक रिवायत में वर्णन मिलता है जिसके अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

فَذَهَبَ وَهَلِيْ اِلٰى أَنَّهَا الْيَمَامَةُ أَوِ الهَجَرُ، فَإِذَا هِيَ الْمَدِيْنَةُ يَثْرِبُ

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल मनाक़िब अलामातुन्नबुव्वत फिल इस्लाम रिवायत नम्बर 3622) कि मेरा ख़्याल इस तरफ़ गया कि यह जगह यमामा या हिज्र है परन्तु क्या देखता हूँ कि वह तो यसरिब शहर है। यमामा भी यमन का एक मशहूर शहर है।

(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 321 जवार अकैडमी पब्ली केशन्ज़ उर्दू बाज़ार कराची 2003 ई.)

और हिज्र नाम की मुतअद्दिद बस्तीयां अरब खित्ते में पाई जाती थीं। बहरीन का एक शहर और बहरीन का एक हिस्सा भी हिज्र कहलाता था।

(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 5 पृष्ठ 452 ज़ेर "हिजर" दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

बहरहाल कुछ ही अरसा बाद हालात एक रुख पर होने लगे और मदीना के सआदत-मंद अंसार ने इस्लाम क़बूल करना शुरू किया तो अल्लाह की ओर से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमपर को बताया गया कि वह सरज़मीन तो यसरब की सरज़मीन थी जो बाद में मदीना के नाम से मशहूर होने वाली थी।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इजतिहाद का वर्णन करते हुए फ़रमाया "वह हदीस जिसके ये शब्द हैं فَذَهَبَ وَهَلِيْ اِلٰى أَنَّهَا الْيَمَامَةُ أَوِ الْهَجَرُ ، فَإِذَا هِيَ الْمَدِيْنَةُ يَثْرِبُ۔ साफ़ साफ़ ज़ाहिर कर रही है कि जो कुछ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने इजतिहाद से भविष्यवाणी का अर्थ समझा था वह ग़लत निकला।"

(अज़ाला-ए-औहाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 472)

इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का के मज़लूम और सितम-रसीदा सहाबा और मुस्लमानों को मदीना की तरफ़ हिज्रत करने की इजाज़त और मार्गदर्शन फ़र्मा दिया जिस पर मक्का के मुस्लमानों ने मदीना की तरफ़ हिज्रत शुरू कर दी। दूसरी तरफ़ बैअत-ए-उक़बा सानिया के बाद इस हिज्रत में भी तेज़ी आ गई और घरों के घर और महलों के मुहल्ले ख़ाली होने लगे। इस सूरत-ए-हाल ने मक्का के ज़ालिम सरदारों को मज़ीद जोश दिला दिया और वे ग़ुस्सा से तिलमिलाने लगे जिस पर उन्होंने एक और क़दम उठाया कि इन मज़लूमों को हिज्रत करने से भी रोका जाने लगा और ज़ुलम-ओ-सितम के नए नए तरीक़े निकाले जाने लगे।

कभी पति को तो जाने दिया लेकिन उसकी पत्नी और बच्चे को उससे छीन लिया गया। कभी किसी से सरमाया और माल-ओ-दौलत इस बहाने हथिया लिया गया कि यह तो तू ने हमारे शहर मक्का में कमाई थी। अगर यहां से जाना है तो ये सारी दौलत हमें देकर जाओ। कभी माँ की ममता का वास्ता देकर रोक लिया कि अपनी माँ से मिलते जाओ और फिर रास्ते में ही उनको रस्सियों से बांध कर कोठड़ियों में डाल दिया।

(उद्धरित सब्लुल हुदा वर्रिशाद, भाग 3 पृष्ठ 224 से 227 जमाअ अब्वाबुल हिजरत इलल मदीनत, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

लेकिन दौलत-ए-ईमान से मालामाल और दीन इस्लाम की मुहब्बत में सरशार सब्र-ओ-शुक्र करने वाले मोमिनों की जमाअत दीवाना-वार मदीना की तरफ़ नियमित रूप से हिज्रत करती चली गई। बहरहाल मक्का कम-ओ-बेश हर उस मुस्लमान से ख़ाली हो गया जो हिज्रत कर सकता था वह हिज्रत कर गया। अब कुछ इंतिहाई कमज़ोर और बेबस मुस्लमान ही पीछे रह गए थे जिनका वर्णन क़ुरआन-ए-करीम ने यूं किया है कि

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَ النِّسَآءِ وَ الْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّ لَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا (अल् निसः: 99)

अतिरिक्ति उन मर्दों और औरतों और बच्चों के जिन्हें कमज़ोर बना दिया गया था और उनमे किसी भी प्रयत्न की शक्ति नहीं थी और न ही उन्हें कोई राह सूझती थी।

उनके अतिरिक्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अभी तक मदीना में ही ख़ुदा के आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी मक्का में ही थे। जबकि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो हिज्रत की इजाज़त तलब करने हाज़िर ख़िदमत हुए तो इरशाद हुआ कि ठहर जाओ। मुझे उम्मीद है कि मुझे भी इजाज़त दी जाएगी या एक रिवायत के अनुसार आपने फ़रमाया कि तुम जल्दी न करो। मुम्किन है अल्लाह तुम्हारे लिए एक साथी का इंतिज़ाम फ़र्मा दे।

इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान, किया आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी हिज्रत की इजाज़त मिल जाएगी? मानो हिज्रत की वजह से नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जुदाई का ग़म जाता रहा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो यह ख़ुशी की सूचना सुनकर वापिस लौट कर आए और हिज्रत का इरादा मुल्तवी कर दिया जबकि उन्होंने हकीमाना अंदाज़ में दो ऊंटनियां ख़रीदीं जिन्हें खासतौर पर खिला खिला कर हिज्रत के अनजाने सफ़र के लिए तैयार करने लगे।

(उद्धरित सही अल् बुख़ारी, किताब अल् किफ़ाल, बाब जवार अबी बक्र फ़ी अह्द अन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और अक़्दा, हदीस 2297) (ख़लीफ़ा अव्वल अबू बकर अल् सिद्दीक़ अज़ सलाबी, पृष्ठ 45 दारुल मारूफ़ बेरूत 2006 ई.)

इन बातों का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके साथियों ने हिज्रत की तैयारी शुरू की। एक के बाद एक ख़ानदान मक्का से ग़ायब होना शुरू हुआ। अब वे लोग भी जो ख़ुदा तआला की बादशाहत का इंतिज़ार कर रहे थे दिलेर हो गए। की दफ़ा एक ही रात में मक्का की एक पूरी गली के मकानों को ताले लग जाते थे और सुबह के वक़्त जब शहर के लोग गली को ख़ामोश पाते तो दरयाफ़्त करने पर उन्हें मालूम होता था कि इस गली के समस्त रहने वाले मदीना को हिज्रत कर गए हैं और इस्लाम के इस गहरे असर को देखकर जो अंदर ही अंदर मक्का के लोगों में फैल रहा था वो हैरान रह जाते थे। आख़िर मक्का मुस्लमानों से ख़ाली हो गया केवल चंद ग़ुलाम, ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का में रह गए।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन अनवारुल उलूम, भाग 20 पृष्ठ 222)

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि "कुफ़्फ़ार मक्का को दूसरे लोगों

की निसबत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से स्वभाविक रूप में ज़्यादा बुग़्ज़ द्वेष था क्योंकि वह देखते थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमही की तालीम की वजह से लोगों में शिर्क की मुख़ालिफ़त फैलती जाती थी। वह जानते थे कि अगर वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल कर दें तो बाक़ी जमाअत ख़ुद बख़ुद बिखर जाएगी। इस लिए बनिसबत दूसरों वे आंहज़रतसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़्यादा दुख देते और चाहते कि किसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमआपने दावे से बाज़ आ जाएं लेकिन बावजूद इन मुश्किलात के आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को तो हिज्रत का हुक्म दे दिया परन्तु ख़ुद उन दुखों और तकलीफों के बावजूद मक्का से हिज्रत नहीं की क्योंकि ख़ुदा तआला की तरफ़ से कोई इज़्न नहीं हुआ था। इसलिए जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा कि मैं हिज्रत कर जाऊं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उत्तर दिया عَلٰى رِسْلِكَ فَإِنِّي أَرْجُو أَنْ يُؤْذَنَ لِيْ।आप अभी ठहरें उम्मीद है कि मुझे भी इजाज़त मिल जाए।''

(सीरतुन नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, अनवारुल उलूम, भाग 1 पृष्ठ 489)

दारुल नदवा में कुफ़्फ़ार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ खुफ़ीया मश्वरा करने के लिए इकट्ठे हुए।

इसके बारे में लिखा है कि मक्का के सरदार अब इस बात पर सख़्त ग़ुस्सा में थे और पेच-ओ-ताब खा रहे थे कि मुस्लमान उनके हाथ से बच कर निकल गए हैं इस पर अब वह दारुल नदवा में जमा हुए। अल्लामा इब्न-ए-इसहाक़ कहते हैं कि जब क़ुरैश ने देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ एक गिरोह और कुछ अस्हाब मिल गए हैं जो न मक्का के मुस्लमानों में से हैं और न ही उनके इलाक़े के हैं। तथा क़ुरैश ने देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा उन लोगों की तरफ़ हिज्रत करके निकल रहे हैं तो क़ुरैश ने जान लिया कि वह एक अमन की जगह पड़ाव कर रहे हैं और उन्हें उन लोगों अर्थात अहले मदीना की जानिब से मुकम्मल तहफ़्फ़ुज़ फ़राहम हो गया है तो उन्हें ख़दशा हुआ कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिज्रत करके उनकी तरफ़ न चले जाएं और क़ुरैश ने जान लिया कि वे लोग क़ुरैश से जंग के लिए इकट्ठे हो रहे हैं। इसलिए वे आपके लिए दारुल नदवा में जमा हुए। यह कसी बिन किलाब का वह घर था कि क़ुरैश का जो भी फ़ैसला होता था वह इसी में होता था। जब भी उन्हें आपके बारे में संदेह महसूस होता तो वे लोग यहां मश्वरा के लिए आया करते थे। एक और रिवायत में है कि हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि जब वे लोग इसके लिए जमा हुए और उन्होंने अह्द-ओ-पैमान किया कि वे दारुल नदवा में दाख़िल होंगे ता कि वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में मशवरा करें। जिस दिन का उन्होंने अह्द-ओ-पैमान किया था उस दिन वे लोग गए और वे दिन يَوْمُ الزَّحْمَة कहलाता है। उनके सामने एक बूढ़े और उम्र रसीदा व्यक्ति की हैयत में इबलीस ज़ाहिर हुआ। अर्थ यह है कि ऐसा इन्सान था जो इबलीस सिफ़त इन्सान था। बहरहाल जिसने चादर ओढ़ी हुई थी और दारुल नदवा के दरवाज़े पर खड़ा हुआ। लोग उसे जानते नहीं थे। जब उन लोगों ने उसे दरवाज़े पर खड़ा देखा तो उन्होंने कहा यह बूढ़ा व्यक्ति कौन है? इस व्यक्ति ने कहा कि मैं अहल-ए-नजद में से एक बूढ़ा व्यक्ति हूँ और उसने कहा कि मैं ने वह बात सुन ली है जिसका तुमने अह्द-ओ-पैमान किया था। अत: तुम्हारे पास मैं इसलिए आया हूँ कि ताकि सुन लूं कि तुम लोग क्या कहते हो। उम्मीद है कि तुम्हें इस से कोई न कोई राय या भलाई मिल जाएगी। उसने अपने बारे में कहा। उन लोगों ने कहा ठीक है अंदर आ जाओ। वे उन लोगों के साथ अंदर दाख़िल हो गया। वहां क़ुरैश के सरदार उनकी एक बड़ी जमाअत शरीक थी जिनके नुमायां नामों में उत्बा बिन रबीह और शेबा बिन रबीह, अबूसुफ़ियान बिन हरब, तुएयमा बिन अदी और भी कुछ लोग थे। अबू जहल बिन हश्शाम, हज्जाज के दो बेटे और बहुत सारे लोग थे। इसके अतिरिक्त कुछ सरदार भी थे जिनका शुमार क़ुरैश से नहीं होता। जब सब लोग जमा हो गए तो तजावीज़ देने का वक़्त आया तो एक व्यक्ति ने तजवीज़ पेश की कि उसे अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम) को लोहे की बेड़ियों में जकड़ कर क़ैद कर दो और बाहर से दरवाज़ा बंद करो। फिर इस पर इसी मौत के आने का इंतिज़ार करो जिस तरह इस से पहले दो कवियों ज़ुहैर और नाबिग़ा इत्यादि का हो चुका है। और अन्य कवियों पर जो पहले गुज़र चुके हैं। अर्थात अंजाम का इंतिज़ार करो जिस तरह इस से पहले दो कवियों ज़ुहैर और नाबिग़ा इत्यादि का हो चुका है अर्थात मौत उनका ख़ातमा कर दे तो जैसे उनको मौत आई थी आपके लिए भी यही plan किया गया। इस पर इस बूढ़े नन्दी ने कहा नहीं। अल्लाह की क़सम मेरे नज़दीक यह राय तुम्हारे लिए मुनासिब नहीं है। वल्लाह अगर तुम लोगों ने उसे क़ैद कर दिया तो इस की ख़बर बंद दरवाज़े से बाहर निकल कर उसके साथियों तक ज़रूर पहुंच जाएगी। फिर कुछ बईद नहीं कि वे लोग तुम पर धावा बोल कर इस व्यक्ति को तुम्हारे क़बज़ा से निकाल ले जाएं। फिर उसकी मदद से अपनी संख्या बढ़ा कर तुम्हें मग़्लूब कर लें। इस लिए कोई और तजवीज़ सोचो। इस पर एक व्यक्ति ने यह तजवीज़ दी कि हम इस व्यक्ति को अपने मध्य से निकाल दें और अपने शहर से जिला-वतन कर दें फिर हमें इस से कोई वास्ता नहीं कि वह कहाँ जाता है और कहाँ रहता है। जब वह हमसे ग़ायब हो जाएगा और हम इस से फ़ारिग़ हो जाएंगे तो हमारा मामला ठीक हो जाएगा और हम पहले जैसी हालत में रहने लगेंगे। इस पर बूढ़े नन्दी ने कहा कि नहीं अल्लाह की क़सम यह राय भी ठीक नहीं। तुम देखते नहीं कि इस व्यक्ति की बात कितनी उम्दा और बोल कितने मीठे हैं और जो कुछ लाता है इसके माध्यम से किस तरह लोगों के दिलों को मग़्लूब कर लेता है। अल्लाह की क़सम अगर तुमने ऐसा किया तो तुम लोग अमन में नहीं रहोगे कि वह अरब के किसी क़बीला में उतरे और अपनी बातों से उन पर ग़लबा हासिल कर ले और वे लोग उसकी पैरवी करने लगें। फिर उनके साथ मिलकर तुम्हारी तरफ़ पेशक़दमी करें और तुम्हें तुम्हारे ही शहर में रौंद डालें और तुम्हारे मामलात तुम्हारे हाथों से ले लें और फिर जैसा चाहे तुमसे सुलूक करें। इस लिए इसके अतिरिक्त कोई और तजवीज़ सोचो। इस पर अबुजहल ने कहा कि मेरी राय तो यह है कि क़ुरैश के हर क़बीले से एक एक नौ उम्र, मज़बूत और खानदानी जवान चुना जाए और उनमें से हर एक के हाथ में तेज़ काटने वाली तलवार दे दी जाए फिर वे लोग इस अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का क़सद करें और एक व्यक्ति के हमला करने की तरह इस पर हमला किया जाए और वे उसे क़तल कर दें। यूं हमें इस व्यक्ति से राहत मिल जाएगी। इस तरह क़तल करने का नतीजा यह होगा कि इस व्यक्ति का ख़ून सारे क़बायल में मुनक़सिम हो जाएगा और बनू अबद-ए-मुनअफ़ सारे क़बीलों से जंग न कर सकेंगे। इस लिए दियत लेने पर राज़ी हो जाऐंगे और हम दियत अदा कर देंगे। इस पर बूढ़े नन्दी ने कहा। राय है तो बस उस व्यक्ति की, बाक़ी सब फ़ुज़ूल बातें हैं। उद्देश्य इस राय पर सब संयोग करते हुए चले गए।

सीरतुं नबविय्या ले इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 340 से 342 वर्णन हिजरते रसूल, प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस सारी सूरत-ए-हाल से आगाह फ़र्मा दिया जैसा कि वह फ़रमाता है : وَ اِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ وَ يَمْكُرُوْنَ وَ يَمْكُرُ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ(अल् अनफ़ाल : 31) और याद करो जब वे लोग जो काफ़िर हुए तेरे विषय में साज़िशें कर रहे थे ताकि तुझे एक ही जगह पाबंद कर दें या तुझे क़तल कर दें या तुझे वतन से निकाल दें और वे षडयंत्र में व्यस्त थे और अल्लाह भी उनके षडयंत्र का तोड़ कर रहा था और अल्लाह उपाय करने वालों में सबसे बेहतर है और साथ ही जिब्राइल के माध्यम से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हिज्रत की इजाज़त दे दी।

(सब्लुल हुदा व रिशाद, भाग 3 पृष्ठ 232 फी हिजरतिन्नबी(स) दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मक्का के कुफ़्फ़ार ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल करने का इरादा किया तो अल्लाह तआला ने अपने इस पाक नबी को इस बद इरादे की ख़बर दे दी और मक्का से मदीना की तरफ़ हिज्रत करके जाने का हुक्म फ़रमाया और फिर विजय हो कर वापस आने की खुशखबरी दी। बुध का दिन और दोपहर का वक़्त और सख़्त गर्मी के दिन थे जब यह परीक्षा अल्लाह की ओर से प्रकट हुआ। (सुर्मा चशम आर्या, रुहानी खज़ायन भाग 2, पृष्ठ 64 हाशिया)

हिज्रत की इजाज़त मिलने पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूरी एहतियात के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के घर ठीक दोपहर के वक़्त अर्थात उस वक़्त तशरीफ़ ले गए कि जिस वक़्त मक्का के बाशिंदे उमूमन अपने घरों में ही रहते हैं और एक दूसरे की तरफ़ आना जाना नहीं होता और मज़ीद एहतियात यह भी की कि शदीद गर्मी जो थी इसलिए अपना चेहरा और सिर इत्यादि भी कपड़े से ढाँपे रखा। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के घर के क़रीब पहुंचे तो किसी ने बताया और तिबरानी और फ़तह अल् बारी की रिवायत के अनुसार हज़रत उसाम रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाते हुए मालूम होते हैं। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहने लगे कि मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमपर क़ुर्बान, अल्लाह की क़सम! नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो इस घड़ी में हमारे पास तशरीफ़ लाए हैं इस की वजह कोई ख़ास बात है जो पेश आई है और साथ ही हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो घबरा कर तेज़ी से बाहर निकले और जब नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन्दर तशरीफ़ लाए तो कमरे में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि तुम्हारे पास जो लोग हैं उनको बाहर भेज दो जिस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर केवल यही मेरी दो बेटियां उस वक़्त यहां हैं, और कोई नहीं है या एक रिवायत के अनुसार अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! केवल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर के लोग ही यहां हैं और कोई नहीं। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मुझे हिज्रत की इजाज़त मिल गई है।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बेसाख़्ता अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ! आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिफ़ाक़त? अर्थात मैं भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हूँगा? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। यह बुख़ारी की है। (सही बुख़ारी, किताब बाब इज़्शतरा मताअन अऔ दाबतन फवज़अ इन्दहू इन्दल बाअे रिवायत नम्बर 2138) (सही बुख़ारी, किताब मनाक़िब अन्सार, बाब हिजरतिन्नबी (स) व अस्हाबहू इल्ल मदीनत रिवायत नंबर 3905)(फ़तह

अल् बारी शरा सही अल् बुखारी, भाग 7 पृष्ठ 277 दारय्यान लिल्तुरास अल्क़ाहेरह 1986 ई)

इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुशी से रो पड़े। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि इस दिन पहली बार मुझे मालूम हुआ कि ख़ुशी से भी कोई रोता है। (सीरतुं नबविय्या ले इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 343 वर्णन हिजरत रसूल, प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

इसके बाद वहां हिज्रत की सारी मंसूबा बंदी और लाहे अमल तैयार किया गया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसी उद्देश्य के लिए मैंने दो ऊंटनियां ख़रीदी हुई थीं। उनमें से एक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमले लें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़ीमत देकर लूँगा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब क़ीमत देने पर इसरार किया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए उसके सिवा कोई चारा न रहा। दो ऊंटनियां हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आठ सौ दिरहम में ख़रीदी थीं और चार-सौ दिरहम में एक ऊंटनी नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़रीदी या एक रिवायत के अनुसार नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह ऊंटनी आठ सौ दिरहम में ख़रीदी थी।

(सही बुख़ारी, किताब मनाक़िब अन्सार बाब हिजरतन्नबी (स) व अस्हाबहू इलल मदीनते. रिवायत नंबर 3905) (अल् तब्क़ातुल कुबरा लेइब्ने साद, भाग 1 पृष्ठ 382 ज़िक्र इबल रसूलुल्लाह (स)प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (शरह अल् ज़र्क़ानी अली मवाहिब अल् लुदनी, भाग 2 पृष्ठ 105-106 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

फिर यह तै किया गया कि पहली मंज़िल ग़ार-ए-सौर होगी और तीन दिन वहीं क़ियाम करना होगा और यह भी तै हुआ कि किसी ऐसे माहिर को लिया जाए जो मक्का के चारों तरफ़ के समस्त मारूफ़ और ग़ैर-मारूफ़ सहरा के रास्तों से वाक़िफ़ हो। इसके लिए अबदुल्लाह बिन उर्य से बात हुई। यह जबकि मुशरिक था लेकिन शरीफ़ुल नफ़्स और ज़िम्मेदार और दियानतदार व्यक्ति था। सीरत निगार इसके बारे में कहते हैं कि यह मुस्लमान नहीं हुआ था जबकि एक रिवायत के अनुसार उसने बाद में इस्लाम क़बूल कर लिया था। बहरहाल उसके हवाले तीन ऊंटनियां की गईं और तै किया गया कि ठीक तीन दिन बाद ग़ारे सौर पर सुबह सुबह चला आए। हज़रत अबदुल्लाह बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जो एक होशयार नौजवान थे उनके सपुर्द यह डयूटी लगाई गई कि वह रोज़ाना मक्का की मजालिस में घूम फिर कर जायज़ा लेंगे कि क्या कुछ हो रहा है और फिर रात को वे ग़ार-ए-सौर पहुंच कर सारी रिपोर्टें करेंगे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के एक बुद्धिमान और ज़िम्मेदार ग़ुलाम आमिर बिन फ़ुहैरा के सपुर्द यह डयूटी हुई कि वह अपनी बकरिया ग़ार-ए-सौर के निकट ही चराएगा और रात के वक़्त वे दूध देने वाली बकरियों का ताज़ा दूध फ़राहम करेगा और फिर मक्का से निकलने का वक़्त तै करने के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जल्द ही हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के घर से वापस अपने घर तशरीफ़ ले आए। (उद्धरित तारीख़ अल्खमीज़, भाग 2 पृष्ठ 7 ख़रूज मअ अबी बकर मिन मक्का प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2009 ई.) (अर्रहीक़ुल मख़्तूम लेखक सफीउर्रहमान, पृष्ठ 165 प्रकाशन 2018دار الغد الجدید) (शरह अल् ज़र्क़ानी, भाग 2 पृष्ठ 129 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

यहां आकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने हिज्रत के प्रोग्राम से आगाह करते हुए उनके सपुर्द एक जान कुर्बान करने वाला काम यह किया कि आज रात वे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बिस्तर-ए- मुबारक पर वही सबज़ या एक रिवायत के अनुसार सुर्ख़-रंग की हजरमी चादर ओढ़ कर सोएँगे जो नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद लेकर सोया करते थे और अपने इस जांनिसार फ़िदाई ख़ादिम को ख़ुदाई ताईद और नुसरत की यक़ीन देहानी कराते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि फ़िक्र न करना और बड़े आराम से मेरे बिस्तर पर सोए रहना दुश्मन तुम्हारा बाल भी बीका नहीं कर सकता।

तथा सादिक़ और अमीन रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चूँकि मक्का वालों की दी हुई अमानतों की भी फ़िक्र और ज़िम्मेदारी का एहसास था इसलिए फ़रमाया कि वे लोगों को अमानतें वापस करते हुए मेरे पीछे आ जाएं। अर्थात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़रमाया कि अमानतें वापस करके फिर मदीना आ जाना। इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु तीन दिन मक्का में ठहरे यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से लोगों को अमानतें वापस कर दें। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो इस से फ़ारिग़ हो गए तो आप भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क़ुबा में जा मिले। इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर से बाहर तशरीफ़ लाए जबकि कुफ़्फ़ार मक्का के चुनीदा बहादुर जिनकी आँखों में गोया ख़ून उतरा हुआ था वे तलवारें हाथ में लिए ठीक नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर के बाहर चाक़-ओ-चौबंद पेहरा दे रहे थे कि कब रात गहिरी हो और हम धावा बोल कर एक ही वार में रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गोया काम पूरा कर दें और अबुजहल जो कि गोया उनका सरग़ना था बड़े तकब्बुर और उपहास से यह कह रहा था कि मुहम्मद यह कहता है कि अगर तुम उसके मामला में इस की पैरवी करोगे तो तुम अरब-ओ-अजम के बादशाह बन जाओगे फिर तुम अपनी मौत के बाद उठाए जाओगे तो तुम्हारे लिए अरदन के बाग़ात की भांति बाग़ात बनाए जाऐंगे और अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारे मध्य क़तल-ओ-ग़ारतगरी होगी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर निकले और फ़रमाया हाँ ऐसे ही मैं कहता हूँ और सूरत यासीन की यह आयात पढ़ते हुए कि

يٰس۔ وَ الْقُرْاٰنِ الْحَکِیْمِ۔ اِنَّکَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ۔ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ۔ تَنْزِیْلَ الْعَزِیْزِ الرَّحِیْمِ۔ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّاۤ اُنْذِرَ اٰبَآؤُھُمْ فَھُمْ غٰفِلُوْنَ۔ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰۤی اَکْثَرِھِمْ فَھُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ۔ اِنَّا جَعَلْنَا فِیْۤ اَعْنَاقِھِمْ اَغْلٰلًا فَھِیَ اِلَی الْاَذْقَانِ فَھُمْ مُّقْمَحُوْنَ۔ وَ جَعَلْنَا مِنْۢ بَیْنِ اَیْدِیْھِمْ سَدًّا وَّ مِنْ خَلْفِھِمْ سَدًّا فَاَغْشَیْنٰھُمْ فَھُمْ لَا یُبْصِرُوْنَ۔ (यासीन : 2-10)

या सीन। या सय्यद! इस का अनुवाद यह है कि हे सरदार हिक़्मतों वाले क़ुरआन की क़सम है तू निसंदेह मुर्सलीन में से है। सिराते मुस्तक़ीम पर गामज़न है। यह कामिल ग़लबा वाले और बार-बार रहम करने वाले की तंज़ील है ताकि तू एक ऐसी क़ौम को डराए जिनके पूर्वज नहीं डराए गए। अत: वे ग़ाफ़िल पड़े हैं। निसंदेह उनमें से अक्सर पर कथन सादिक़ आ गया है। अत: वे ईमान नहीं लाएँगे। निसंदेह हम ने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं और वे अब ठोढ़ियों तक पहुंचे हुए हैं। इसलिए वह सिर ऊंचा उठाए हुए हैं और हमने उनके सामने भी एक रोक बना दी है और उनके पीछे भी एक रोक बना दी है और उन पर पर्दा डाल दिया है इसलिए वे देख नहीं सकते।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके सिरों पर ख़ाक डालते हुए उनके सामने से निकल गए लेकिन ख़ुदा की क़ुदरत कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जाते हुए किसी को भी दिखाई नहीं दिए बल्कि वे लोग गाहे-गाहे अंदर झांक कर देख लेते और इतमीनान कर लेते कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने बिस्तर पर ही हैं। (सीरतुं नबविय्या ले इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 342-348 बाब हिजरत रसूल (स) दारुल क़ुतुब इल्मिया 2001ई.)(मुहम्मद रसूलुल्लाह वल्लज़ीन मअहू,भाग 3 पृष्ठ 74 बाबुल हिजरत प्रकाशन मकतबा मिस्र)(अल् तब्क़ातुल कुबरा ले इब्ने साद, भाग 1 पृष्ठ 176 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

इस वाक़िया का वर्णन सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने यूं किया है कि "रात का अँधेरा वक़्त था और ज़ालिम क़ुरैश जो मुख़्तलिफ़ क़बायल से ताल्लुक़ रखते थे अपने ख़ूनी इरादे के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मकान के गर्द जमा हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मकान का मुहासिरा कर चुके थे और इंतिज़ार था कि सुबह हो या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आपने घर से निकलें तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर एक दम हमला करके क़तल कर दिया जाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कुछ कुफ़्फ़ार की अमानतें पड़ी थीं क्योंकि बावजूद शदीद मुख़ालिफ़त के अक्सर लोग अपनी अमानतें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमके सिदक़ और अमानत की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास रखवा दिया करते थे। इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को इन अमानतों का हिसाब किताब समझा दिया और ताकीद की कि बग़ैर अमानतें वापस किए मक्का से नहीं निकलना। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम मेरे बिस्तर पर लेट जाओ और तसल्ली दी कि उन्हें ख़ुदा के फ़ज़्ल से कोई हानि नहीं पहुँचेगा। वह लेट गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने अपनी चादर जो लाल रंग की थी उनके ऊपर उड़ा दी। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमअल्लाह का नाम लेकर अपने घर से निकले। उस वक़्त मुहासिरीन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़े के सामने मौजूद थे परन्तु चूँकि उन्हें यह ख़्याल नहीं था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस क़दर रात के पेहल हिस्से में ही घर से निकल आएँगे वह उस वक़्त इस क़दर ग़फ़लत में थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन के सिरों पर ख़ाक डालते हुए उनके मध्य से निकल गए और उनको ख़बर तक न हुई वे क़ुरैश जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर का घेराव किए हुए थे वे थोड़ी थोड़ी देर के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर के अंदर झांक कर देखते थे तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जगह पर लेटा देख कर संतुष्ट हो जाते थे लेकिन सुबह हुई तो उन्हें इलम हुआ कि उनका शिकार उनके हाथ से निकल गया है। इस पर वे इधर उधर भागे। मक्का की गलियों में सहाबा के मकानात पर तलाश किया परन्तु कुछ पता न चला। इस ग़ुस्सा में उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को पकड़ा और कुछ मारा पीटा।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, पृष्ठ 236-237)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस का वर्णन करते हुए फ़रमाया है कि "जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक गुप्त तौर पर अपने पुराने शहर को छोड़ने लगे और मुख़ालिफ़ीन ने मार डालने की नीयत से चारों तरफ़ से इस मुबारक घर को घेर लिया तब एक जानी अज़ीज़ जिसका वजूद मुहब्बत और ईमान से ख़मीर किया गया था जाँबाज़ी के तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बिस्तर पर नबी के आदेश अनुसार इस उद्देश्य से मुहं छुपा कर लेटे रहे ताकि मुख़ालिफ़ों के जासूस आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकल जाने की कुछ तफ़तीश न करें और उसीको

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समझ कर क़तल करने के लिए ठहरे रहीं।

عِشق است که اِیں کار بَصَدْ صِدق کُنَانَد کس بہرِ کَسے سر نَدِہَد جان نَفشَانَد

(सुर्मा चशम आर्या, रुहानी खाज़ायन भाग 2 पृष्ठ 64-65 हाशिया)

अर्थात कोई व्यक्ति किसी दूसरे के लिए सिर नहीं देता न ही जान छिड़कता है। यह इशक़ है जो यह काम इन्सान से करवाता है।

बहरहाल यह वक़्त के बारे में रिवायत हैं। इस में इख़तिलाफ़ है। कुछ कहते हैं पहले वक़्त, कुछ कहते हैं मध्य की रात, कुछ कहते हैं अंतिम वक़्त। बहरहाल किस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर से निकले इस बारे में जो रिवायत में इख़तिलाफ़ है इस का वर्णन करता हूँ।

एक रिवायत में वर्णन है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमरात की आख़िरी तिहाई में घर से बाहर तशरीफ़ लाए थे। इसलिए मुहम्मद हुसैन हैकल लिखते हैं कि रात की आख़िरी तिहाई में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन मुशरिकीन की ग़फ़लत की वजह से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के घर की तरफ़ निकले और वहां से दोनों घर के पिछले दरवाज़े से निकल कर दक्षिण में ग़ार-ए-सौर की तरफ़ चल पड़े।

(हयात मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 223-224 अल्फसलुल आशिर हिजरतर्रसूल अत्तबअत अर्राबिअ अशर दारुल मआरिफ)

फिर एक रिवायत में यह वर्णन है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आधी रात के वक़्त निकले। इसलिए दलायल अन्नबवाह में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आधी रात के वक़्त ग़ार सौर की तरफ़ रवाना हुए थे।(दलायल अन्नबवाह, भाग 2 पृष्ठ 466-465 मकरुल मुश्रेकीन बेरसूलुल्लाह(स) प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

"मदारेजुन्नबुव्वत"में लिखा है कि "जब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरादा फ़रमाया कि सुबह के वक़्त-ए-हिजरत कर जाएं तो शाम ही को हज़रत अली मुर्तज़ा से फ़रमाया कि आज रात तुम यहीं सोना ताकि मुशरिकीन संदेह में हो कर हक़ीक़त-ए-हाल से बाख़बर न हों।'' (मदारिज अन्नबवाह अज़ शेख़ अब्दुलहक मुहद्दिस देहलवी उर्दू अनुवाद ग़ुलाम मुईन नईमी, भाग 2 पृष्ठ 83 प्रकाशन शब्बीर बर्दर्ज़ लाहौर)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो लिखा है, वह यह है कि नबी करीम रात के पहले हिस्से में अपने घर से निकले थे। इसलिए उसकी तफ़सील में लिखते हैं कि'' मुहासिरीन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़े के सामने मौजूद थे परन्तु चूँकि उन्हें ये ख़्याल नहीं था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस क़दर रात के पहले हिस्से में ही घर से निकल आएँगे वे उस वक़्त इस क़दर ग़फ़लत में थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके सिरों पर मिट्टी डालते हुए उनके मध्य से निकल गए और उनको ख़बर तक नहीं हुई। अब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ामोशी के साथ परन्तु जल्द जलद मक्का की गलियों में से गुज़र रहे थे और थोड़ी ही देर में आबादी से बाहर निकल गए और ग़ार-ए-सौर की राह ली। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ पहले से समस्त बात तै हो चुकी थी वह भी रास्ता में गए।''

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो, पृष्ठ 237)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो रिवायत से ले के फ़रमाया है वह यह है कि''जब मक्का के लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर के सामने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल के लिए जमा हो रहे थे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात की तारीकी में हिज्रत के इरादा से अपने घर से बाहर निकल रहे थे। मक्का के लोग ज़रूर संदेह करते होंगे कि उनके इरादा की ख़बर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी मिल चुकी होगी परन्तु फिर भी जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके सामने से गुज़रे तो उन्होंने यही समझा कि यह कोई और व्यक्ति है और बजाय आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला करने के सिमट सिमटा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से छुपने लग गए ताकि उनके इरादों की मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को ख़बर न हो जाए। इस रात से पहले दिन ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हिज्रत करने के लिए अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी इत्तिला दे दी गई थी। अत: वह भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिल गए और दोनों मिलकर थोड़ी देर में मक्का से रवाना हो गए।"

(दीबाचा तफ़सीरुल-क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20 पृष्ठ 222-223)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अनुसार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुबह के वक़्त घर से निकले थे। इसलिए आप फ़रमाते हैं कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जाते वक़्त किसी मुख़ालिफ़ ने नहीं देखा हालाँकि सुबह का वक़्त था और समस्त मुख़ालिफ़ीन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर का घेराव कर रहे थे। अत: ख़ुदाए तआला ने जैसा कि सूरा-ए-यासीन में इस का वर्णन किया है इन सब निर्दय और कठोर हृदय वाले की आँखों पर पर्दा डाल दिया और आँहज़रत उनके सिरों पर मिटटी डाल कर गए।''

(सुर्मा चशम आर्या, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 2 पृष्ठ 66 हाशिया)

बहरहाल मुख़्तलिफ़ रिवायतें हैं लेकिन परिणाम यही है कि कुफ़्फ़ार को पता नहीं लगा। फिर यह भी मुख़्तलिफ़ रिवायत हैं कि अपने घर से निकल कर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किस तरफ़ तशरीफ़ ले गए।

एक रिवायत से यह तास्सुर मिलता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर से निकले होंगे और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपने घर से और रास्ते में किसी एक जगह पर दोनों इकट्ठे हो कर ग़ार-ए-सौर की तरफ़ चल पड़े।

(उद्धरित तारीख़ तिबरी, भाग प्रथम, पृष्ठ 568 तारीख़ मा क़बलिल हिजरत. प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.)

एक रिवायत में है कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर से ग़ार-ए-सौर की तरफ़ निकले और कुछ देर बाद अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर पहुंचे तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें फ़रमाया कि वह तो जा चुके हैं और ग़ार-ए-सौर की तरफ़ तशरीफ़ ले जा रहे हैं इसलिए आप भी उनके पीछे पीछे चले जाएं। इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे चले गए।

(अलहल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 47 बाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नसहू दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2008 ई.)

बहरहाल यह रिवायत तो बहुत कमज़ोर लगती है। इस से यह तास्सुर मिलता है कि मानो नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का इंतिज़ार फ़रमाते रहे और वह लेट हो गए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को यह भी इलम नहीं कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किधर गए होंगे और सब कुछ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अब उन्हें बता रहे हैं। हिज्रत जैसा अहम तरीन राज़दाराना सफ़र और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसा फ़हीम और ज़िम्मेदार व्यक्ति इस तरह की लापरवाई का मुर्तक़िब हो यह सम्भव नहीं हो सकता। इसलिए इस रिवायत की निसबत दूसरी रिवायत जो ज़्यादा-तर कुतुब में मौजूद है वह ज़्यादा दरुस्त और क़रीन-ए-क़ियास मालूम होती है क्योंकि उसके अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर से निकल कर सीधे हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के घर तशरीफ़ ले गए और वहां से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ ग़ार-ए-सौर की तरफ़ रवाना हुए।

(सीरतुं नबविय्या ले इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 343 हिज्रतर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

इस अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की दो बावफ़ा बहादुर बेटियों हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने सफ़र के लिए खाना भी जल्दी जल्दी तैयार कर दिया था जिसमें भुनी हुई बकरी का गोश्त भी था। हालात की नज़ाकत और जल्दी में खाने का बर्तन जो चमड़े का था बाँधने को कुछ न मिला तो हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपना निताक़ अर्थात कमरबंद खोला और इसके दो हिस्से किए और खाना बाँधा। एक से तोशा दान और दूसरे से मश्कीज़े का मुँह बांध दिया।
(सही अल् बुखारी, किताब बाब हमलज़्ज़ाद फिस्सफरे, रिवायत नम्बर 2979)

(शरह अज़्ज़रकानी अलल्मवाहेबुल्लदुन्नी भाग 2 पृष्ठ 107 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो इशक़-ओ-वफ़ा के इन लमहात को बग़ौर देख रहे थे फ़रमाने लगे कि हे अस्मा! अल्लाह तुम्हारे इस निताक़ के बदले में तुम्हें जन्नत में दो नताक़ अता करेगा। अर्थात कि कमरबंद जो कपड़ा कमर पर बाँधा हुआ था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद की वजह से बाद में हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा को ذات النِّطَاقَين कहा जाने लगा।

(सब्लुल हुदा व रिशाद, भाग 3 पृष्ठ 239 जमाअ अब्वाब अल्हिजरत इलल मदीनत दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

हिज्रत के इस सफ़र में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुंह में इस आयत का विर्द फ़रमाते हुए चले जा रहे थे

وَ قُلۡ رَّبِّ اَدۡخِلۡنِیۡ مُدۡخَلَ صِدۡقٍ وَّ اَخۡرِجۡنِیۡ مُخۡرَجَ صِدۡقٍ وَّ اجۡعَلۡ لِّیۡ مِنۡ لَّدُنۡکَ سُلۡطٰنًا نَّصِیۡرًا (बनी इस्राईल : 81)

और तू कह हे मेरे रब मुझे इस तरह दाख़िल कर कि मेरा दाख़िल होना सच्चाई के साथ हो और मुझे इस तरह निकाल कि मेरा निकलना सच्चाई के साथ हो और अपनी जनाब से मेरे लिए ताक़तवर मददगार प्रदान कर।

(अलख़लीफतल अव्वल अबू बकर अस्सिद्दीक ले दक्तूर अला मुहम्म अस्सलाबी, पृष्ठ 47 दारुल मारफ़ा बेरूत 2006 ई.)

और ऐसा ही इस दुआ का भी वर्णन मिलता है कि

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ خَلَقَنِیْ وَلَمْ أَكُ شَيْئًا، اَللّٰهُمَّ أَعِنِّیْ عَلٰى هَوْلِ الدُّنْيَا، وَبَوَائِقِ الدَّهْرِ، وَمَصَائِبِ اللَّيَالِيْ وَالْأَيَّامِ۔ اَللّٰهُمَّ اصْحَبْنِیْ فِیْ سَفَرِیْ، وَاخْلُفْنِیْ فِیْ أَهْلِیْ، وَبَارِكْ لِیْ فِيْمَا رَزَقْتَنِیْ، وَلَكَ فَذَلِّلْنِیْ، وَعَلٰى صَالِحِ خُلُقِیْ فَقَوِّمْنِیْ، وَإِلٰى رَبِّیْ فَحَبِّبْنِیْ، وَإِلَى النَّاسِ فَلَا تَكِلْنِیْ۔ أَنْتَ رَبُّ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ وَأَنْتَ رَبِّیْ، أَعُوْذُ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ الَّذِیْ أَشْرَقَتْ لَهُ السَّمٰوَاتُ وَالْأَرْضُ، وَكُشِفَتْ بِهِ الظُّلُمَاتُ، وَصَلُحَ عَلَيْهِ أَمْرُ الْأَوَّلِيْنَ وَالْآخِرِيْنَ، أَنْ يَّحِلَّ بِیْ غَضَبُكَ، أَوْ يَنْزِلَ عَلَیَّ سُخْطُكَ، أَعُوْذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ، وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ، وَتَحَوُّلِ عَاقِبَتِكَ وَجَمِيْعِ

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 7 Thursday 3 February 2021 Issue No.5

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

سُخْطِكَ۔ لَكَ الْعُتْبٰى خَيْرَ مَا اسْتَطَعْتُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِكَ۔

समस्त तारीफ़ें अल्लाह के लिए जिसने मुझे पैदा किया और मैं कुछ भी नहीं था। हे अल्लाह दुनिया के ख़ौफ़ पर और ज़माने के मसायब पर और रात और दिन के मसायब पर मेरी मदद फ़र्मा। हे अल्लाह मेरे सफ़र में तू मेरा साथी हो जा और मेरे अहल में मेरा स्थानामपन हो जा और जो तू ने मुझे दिया है इस में मेरे लिए बरकत रख दे और मुझे अपने ही अधीन कर दे और मेरी उम्दा तख़लीक़ पर मुझे मज़बूत कर दे और मेरे रब का मुझे महबूब बना दे और मुझे लोगों के सपुर्द न करना। तू कमज़ोरों का रब है और तू मेरा भी रब है। तेरी कृपा से आसमान तथा ज़मीन रोशन हुए और जिस से अंधेरे छुट गए और जिससे पहलों और बाद में आने वालों का मामला ठीक हो गया मैं इस की पनाह में आता हूँ इस बात से कि मुझ पर तेरा ग़ज़ब उतरे या मुझ पर तेरी नाराज़गी नाज़िल हो। मैं तेरी पनाह में आता हूँ तेरी नेअमत के ज़ायल होने से और तेरे इंतिक़ाम के अचानक आने से और मेरे बारे में तेरे आख़िरी फ़ैसले के बदल जाने से।

शरह ज़रक़ानी में تَحَوُّلِ عَاقِبَتِكَ کی جگہ تَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ के शब्द भी आए हैं। इस का अर्थ है कि तेरी अता करदा आफ़ियत के जाते रहने से और तेरी हर किस्म की नाराज़गी से। तेरी ही रजामंदी है हर इस भलाई में जो मैं कर सका। न गुनाह से बचने का कोई हीला है और न ही नेकी करने की कोई ताक़त है परन्तु तेरे ही माध्यम से।

(सब्लुल हुदा व रिशाद, भाग 3 पृष्ठ 243 फ़ी हिजरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ... दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.) (शरह ज़रक़ानी, भाग 2 पृष्ठ 110, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

ख़ाना काबा के पीछे से गुज़रते हुए नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का की तरफ़ अपना रुख मुबारक फ़रमाया और इस बस्ती से यूं सम्बोधित हुए कि ख़ुदा की कसम हे मक्का! तू अल्लाह की ज़मीन में से मुझे सबसे ज़्यादा महबूब है और तू अल्लाह की ज़मीन में से अल्लाह को भी सबसे ज़्यादा महबूब है और अगर तेरे रहने वाले मुझे ज़बरदस्ती न निकालते तो मैं कभी भी न निकलता।

(मुहम्मद रसूलुल्लाह سبل الهدیٰ والرشاد, भाग 3 पृष्ठ 59 अलहजर, मकतब मिस्र)

इमाम बीहक़ी ने लिखा है कि ग़ार-ए-सौर के यात्रा के दौरान हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगे चलते कभी पीछे और कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दाएं हो जाते और कभी बाएं। नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा तो अर्ज़ करने लगे कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझे ख़्याल आता है कोई सामने से न आ रहा हो तो मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमके आगे हो जाता हूँ और जब अंदेशा होता है कोई पीछे से हमला न कर दे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे हो जाता हूँ और कभी दाएं और कभी बाएं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर तरफ़ से महफ़ूज़ रहें।

(सब्लुल हुदा व रिशाद भाग 3 पृष्ठ 240 अल्बाब अर्राबेअ फिल हिजरत रसूलुल्लाह दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

एक रिवायत के अनुसार ग़ार-ए-सौर तक पहुंचते-पहुंचते इस पहाड़ी सफ़र में नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दम मुबारक ज़ख़्मी भी हो गए।

(मुहम्मद रसूलुल्लाह वल्लज़ीन मअहू लेअब्दिल हमीद जौदतस्सहार, भाग 3 पृष्ठ 59 अल् हिजर, प्रकाशन मिस्र)

और एक रिवायत के अनुसार रास्ते में एक पत्थर से ठोकर लगने से पांव मुबारक ज़ख़्मी हो गया था।

(तारीख़ तिबरी, भाग प्रथम, पृष्ठ 568 तारीख़ मा क़बल हिजरत, प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.)

जब ग़ार-ए-सौर तक पहुंचे तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी यहां ठहरें पहले मुझे अंदर जाने दें ताकि मैं अच्छी तरह ग़ार को साफ़ कर लूं और कोई ख़तरे की चीज़ हो तो मेरा उस से सामना हो। इसलिए वे अंदर गए और ग़ार को साफ़ किया, जो भी सुराख़ और बिल इत्यादि थे उनको अपने कपड़े से बंद किया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अंदर आने की दावत दी। कहते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की रान पर सिर रख कर लेट गए और एक सुराख़ जिसके लिए कपड़ा न था या शायद उस वक़्त नज़र न आया हो इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपना पांव रख दिया।

रिवायत में है कि इसी सुराख़ से कोई बिच्छू या साँप इत्यादि डसता रहा लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो इस डर से कि अगर कोई हरकत की तो नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आराम में ख़लल वाक़्य होगा हरकर नहीं फ़रमाते।

यहां तक कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब आँख खोली तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के चेहरे की बदली हुई रंगत को देख कर पूछा कि क्या बात है तो उन्होंने सारी बात बताई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना लुआब मुबारक वहां लगाया और इसके बाद पांव ऐसा था जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

(शरह ज़रक़ानी भाग 2, पृष्ठ 121 बाब हिजरतुल मुस्तफा व अस्हाबहु इलल मदीनत दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

दूसरी तरफ़ क़ुरैश-ए-मक्का जो कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर का मुहासिरा किए हुए थे उनको देखकर एक व्यक्ति ने गुज़रते हुए पूछा कि यहां क्यों खड़े हो? उन्होंने बताया तो वह आदमी कहने लगा कि मैं ने तो मुहम्मद को गलियों से गुज़रते हुए देखा है तो उन्होंने इस व्यक्ति का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा कि वह तो अंदर अपने बिस्तर पर हैं और हम नियमित रूप से उन पर नज़र रखे हुए हैं। फिर रात गए अपने पहले से तय किए मंसूबे के अनुसार जब वह एक दम से अंदर गए और चादर खींच कर सोए हुए को देखा तो क्या देखते हैं कि वह तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो हैं। उनसे पूछा कि मुहम्मद कहाँ हैं? तो उन्होंने कहा कि मुझे मालूम नहीं। इस पर मुशरिकीन ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो की डाँट डपट की और मार पीट की और कुछ देर मकैद रखने के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हो को छोड़ दिया।

बहरहाल इस रिवायत के अनुसार वे लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को डाँट डपट करके मार पीट कर वहां से गुस्से की हालत में वापस चले आए और मक्का की गली गली और घर घर ने आप को तलाश करने लगे।

(तारीख़ अलख़मीस, भाग 2 पृष्ठ 10 वर्णन ख़रूजहू (स) मअ अबी बकर मिन मक्कता प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2009 ई.)

इसी दौरान वे लोग हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के घर भी आए। हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा का सामना हुआ। अबुजहल आगे बढ़ा और पूछा कि तुम्हारा बाप अबू बकर कहाँ है? उन्होंने कहा कि मैं नहीं जानती कि वह कहाँ है? इस पर इस बदबातिन अबुजहल ने अपना हाथ उठाया और इस ज़ोर से हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा के मुँह पर तमांचा मारा कि उनके कान की बाली टूट कर गिर गई और ग़ुस्सा की हालत में वे सब लोग वापस चले गए। (सीरतुं नबविय्या लेइब्ने हशशाम पृष्ठ 344 वर्णन हिजरत रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

मक्का की छान बीन से नाकाम फ़ारिग़ हुए तो माहिर खोजी मक्का के चारों तरफ़ रवाना कर दिए। रईस अमिका उमय्यह बिन खलफ वह स्वयं एक माहिर खोजी को लेकर अपने साथियों समेत एक तरफ़ निकला और इस में कोई संदेह नहीं कि ये खोजी, सुराग़ निकालने में वास्तव में माहिर था। जितनी भी इस की महारत की दाद दी जाए वह कम है क्योंकि यह वाहिद खोजी था कि जो नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों के एक एक निशान को खोज कर ठीक गारे सौर के दाई ओर तक जा पहुंचा और कहने लगा कि मुहम्मद के क़दमों के निशान बस यहां तक हैं। इसके आगे नहीं जाते। अल्लामा बलाज़री ने इस खोजी का नाम अल् कमा बिन कुर्ज़ वर्णन किया है और लिखा है कि फ़तह मक्का के अवसर पर उसने इस्लाम क़बूल कर लिया था । ग़ार-ए-सौ के मुँह पर ये लोग खड़े बातें कर रहे थे और दो हिज्रत करने वाले ठीक उसी ग़ार में न केवल अंदर छिपे हुए थे उन लोगों की बातें सुन रहे थे बल्कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं उनके पांव भी देख रहा था और ख़ुदा की क़सम! अगर उनमें से कोई एक भी अंदर झांक कर देख लेता तो हम पकड़े जाते लेकिन।

ख़तरे और मुसीबत की इस घड़ी में ये दो अकेले नहीं थे बल्कि तीसरा उनके साथ वह ख़ुदा था कि जिसके क़बज़ा क़ुदरत में ज़मीन-ओ-आसमान हैं और जो क़ादिर-ए-मुतलक़ था। सब्लुल हुदा वर्रिशाद, भाग 3 पृष्ठ 241फ़ी हिजर रसूलुल्लाह दारुल क़ुतुब इल्मिया 1993)(उद्धरित सही अल् बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाब मनाक़िब अलमहाजेरीन और मुस्लेहीन रिवायत नंबर 3653)

उसने एक तरफ़ तो उन सुराग़ निकालें वालों के आने से क़बल ही वहां अपनी मोजज़ाना क़ुदरत से एक दरख़्त उगा दिया, मकड़े को भेज कर ग़ार के मुँह पर एक जाला बुन दिया और कबूतरों के एक जोड़े को भेजा कि वहां अपना घोंसला बना कर अंडे भी दे दें। यह रिवायत में है।(अल्मबाहेबुल्लादुन्निया ले अलामह क़स्तलानी, भाग 1 पृष्ठ 292-293 प्रकाशन अल्मक़्तबल इस्लामी बैरूत 2004 ई)

बहरहाल उसके बाद ख़ुदा तआला किस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तसल्ली फ़रमाता है या ये सारी बातें देखने के बाद अल्लाह तआला के हुक्म से आपने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को किस तरह तसल्ली दी। इस का वर्णन इंशा अल्लाह आगे होगा।

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad